गुजरात बाढ़ पीड़ितों की मदद करते हुए विहिप द्वारा समाज से मदद का आह्वान

अहमदाबाद/दिल्ली, 3 अगस्त। गुजरात के बाढ़ग्रस्त गांवों में बनासकांठा पहुंचे विहिप के अंतरराष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ0 प्रवीण तोगड़िया ने विहिप, बजरंग दल और हिंदू हेल्प लाईन द्वारा दी जानेवाली मदद की जानकारी देते हुए कहा कि गुजरात के बाढ़ में जान– माल का असीम नुकसान हुआ है। केंद्र और राज्य सरकार बाढ़ में अटके हुए लोगों को बचाने का काम एनडीआरएफ द्वारा अनवरत कर रही हैं। समाज की भी जिम्मेदारी है कि देशभर में और गुजरात में भी बाढ़पीड़ितों की मदद के लिए आगे आएं। विहिप, बजरंग दल और हिंदू हेल्प लाइन के हजारों कार्यकर्ता दिन रात गांवों– गांवों में पहुंचकर मदद पहुंचा रहे हैं। अकेले बनासकांठा जिले में 186 गांवों में, पाटन जिले में 110 गांवों में मदद गयी है।

बनासकांठा – 7000 कंबल, 3700 रजाइयां, 53000 पानी पाउच, 8 ट्रक भरकर अच्छे कपडे, नमकीन के 55000 पैकेट, बिस्कट के 105 कार्टून, 1000 बूट/चप्पल आदि।

धानोरा और थरा मिलकर 700 परिवार उपयोगी किट (इनमें अनाज, बर्तन और रोज की आवश्यक वस्तुएं हैं) दी गयी हैं और पालनपुर के लिए 6000 परिवार किट अब पहुंच रही है।

कुल 18 तहसीलों में 400 से अधिक गांवों में सैकड़ों ट्रकों और अन्य वाहनों द्वारा सामान पहुंचाया जा रहा है। जहां बड़ी गाड़ी नहीं जा पा रही है क्योंकि रास्ते बह गए हैं, वहां बाइक/साइकिल और पैदल भी सामान पहुंचाया जा रहा है।

घानेरा, थराद, वाव, लावणी, दियोदर, रामनगर, भीलड़ी, डिसा, भाभर, बावला, बारेजा, धोलका, मातर, लिमडी, वाराही, सातलपुर, राघनपुर, हारिज ये और अन्य कई तहसीलों के अनेक गांवों में निम्नलिखित मदद पहुंची है और अधिक मदद भेजी जा रही है–93000 फूट पैकेट्स। 100000 अच्छे कपड़े। 10000 कंबल। 100000 से ज्यादा दवाइयां। किराना सामान के 300000 से ज्यादा किट। परिवार के लिए बर्तन, किराना, माचिस आदि के 50000 से ज्यादा किट।

डॉ0 तोगड़िया ने कहा, ऐसी आपदा में जितना करें उतना आवश्यक है। सरकार ने जमीन और फसल बह गयी ऐसे किसानों को बीघा के हिसाब से कुछ रकम, दूध देनेवाले पशु पर रु. 20000 आदि देने का वचन दिया है। हम इस अच्छे कदम का स्वागत करते हैं। इनमें कुछ बढ़ोत्तरी हो तो सभी बाढ़पीड़ितों को सहाय होगा, इसलिए **कुछ सुझाव :–**

प्रति बीघा या हेक्टर दिए जानेवाली रकम बढ़ायी जाए।

अच्छी उगी हुई फसल और बोए हुए बीज दोनों बह गए हैं, किसानों को उस फसल का संपूर्ण दाम जो आगे बिकने पर मिलता, वह बाजार के दामों से दिया जाए क्योंकि अब उस जमीन पर कोई फसल तुरंत संभव ही नहीं।

सरकार प्रति गाय रु. 20000 देनेवाली ही हैं लेकिन दूध देनेवाली गाय रु. 20000 में नहीं मिलती इसलिए प्रति गाय 35000 और प्रति भैस रु. 50000 दिए जाएं।

बाढ़ क्षेत्र में घर बह

शेष पृष्ठ 20 पर....

हिन्दू विश्व
राष्ट्रीय पुनर्जागरण का पाक्षिक

कुछ रिश्ते बस नाम के होते हैं और कुछ ऐसे भी रिश्ते होते हैं जिनका कोई नाम नहीं होता, लेकिन बहुत काम के होते हैं

वर्ष 20 अंक 16

सितम्बर 01-15, 2017

भाद्रपद शुक्ल- आश्विन कृष्ण/पितृ पक्ष
'साधारण' नामक विक्रम सम्वत्
वि. सं. 2074
युगाब्द 5119

संरक्षक मण्डल
श्री विष्णुहरि डालमिया

सम्पादक
मानवेन्द्र नाथ पंकज

परामर्शदाता
सर्वश्री
डॉ. नन्दकिशोर त्रिखा,
राजेन्द्र शर्मा,
धर्मनारायण शर्मा, विजय कुमार

व्यवस्था - श्री दूधनाथ शुक्ल

मो. -09582555152

सज्जा - श्री महेश कुशवाहा

कार्यालय :
'हिन्दू विश्व'
संकटमोचन आश्रम,
प्रभाग - 6
रामकृष्ण पुरम्,
नई दिल्ली-110022-05
दूरभाष : 09582555152
011-26178992,
011-26103495
ईमेल-hinduvishwa@gmail.com

वैधानिक सूचना

- 'हिन्दू विश्व' में प्रकाशित सामग्री लेखकों के निजी विचार हैं। सम्पादक एवं प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है।
- 'हिन्दू विश्व' से सम्बन्धित सभी वाद प्रकाशन तिथि से 3 महीने के अन्दर केवल नई दिल्ली स्थित न्यायालय में होंगे।

- : मूल्य :-

विदेशों के लिए .....$ 50 USD
वार्षिक डाक व्यय सहित
एक प्रति .....10 ₹
वार्षिक .....200 ₹
त्रिवर्षीय.....500 ₹
पंचवर्षीय .....800 ₹
दसवर्षीय.....1,500 ₹
पन्द्रह वर्षीय.....2,100 ₹

कुल पेज - 28

तीन तलाक असंवैधानिक / अवैध

नई दिल्ली,23 अगस्त। सर्वोच्च न्यायालय ने एक ऐतिहासिक फैसले में मुस्लिम समाज में प्रचलित एक साथ तीन तलाक बोल कर पत्नी को छोड़ने की प्रथा को असंवैधानिक और गैर इस्लामिक घोषित कर दिया है। पांच जजों की संविधान पीठ ने बहुमत से दिए फैसले में कहा है, 3–2 के बहुमत से रिकार्ड की गई अलग अलग राय के मद्देनजर तलाक–ए–बिद्दत यानी तीन तलाक की प्रथा निरस्त की जाती है।.....

बहरहाल, संविधान पीठ का फैसला 395 पेज का है, जिसमें तीन अलग अलग फैसले आए हैं। इनमें से बहुमत के लिए फैसला लिखने वाले जस्टिस कुरियन जोसेफ और जस्टिस आरएफ नरीमन चीफ जस्टिस खेहर और जस्टिस एसए नजीर के अल्पमत के इस नजरिए से सहमत नहीं थे कि तीन तलाक धार्मिक प्रथा का हिस्सा है और सरकार को इसमें दखल देते हुए एक कानून बनाना चाहिए।.....

जस्टिस जोसेफ, जस्टिस नरीमन और जस्टिस उदय यू ललित ने इस मुद्दे पर चीफ जस्टिस खेहर और जस्टिस नजीर से स्पष्ट रूप से असहमति जताई कि तीन तलाक इस्लाम का मूलभूत आधार है।.....

बहुमत के फैसले में जस्टिस जोसेफ ने कहा– मैं चीफ जस्टिस के इस विचार से सहमत होने में बहुत मुश्किल महसूस कर रहा हूं कि तीन तलाक की प्रथा पर अविभाज्य धार्मिक मजहब के रूप में विचार करना चाहिए और यह उनके पर्सनल कानून का अंग है। जस्टिस कुरियन के नजरिए से जस्टिस नरीमन और जस्टिस ललित ने सहमति जताई जो बहुमत के फैसले का हिस्सा थे। पवित्र कुरान की आयतों का हवाला देते हुए जस्टिस जोसेफ ने कहा– वे एकदम स्पष्ट और असंदिग्ध हैं, जहां तक तलाक का संबंध है। पवित्र कुरान ने पवित्रता और स्थिरता का श्रेय विवाह को दिया है।.....

हालांकि अत्यधिक अपरिहार्य परिस्थितियों में तलाक की इजाजत है। परंतु तलाक के अंतिम रूप हासिल करने से पहले सुलह के एक प्रयास, और यदि यह सफल हो गया तो इसे निरस्त करना कुरान के आवश्यक कदम हैं। तीन तलाक के मामले में यह उपाय बंद है। इसलिए तीन तलाक पवित्र कुरान के बुनियादी सिद्धांत के खिलाफ है और इस वजह से यह शरीयत का हनन करता है। – नया इंडिया, 23 अग. **(पृष्ठ 26 भी देखें)**

सम्पादकीय

मान. सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर वितंडावाद क्यों ? 04
राष्ट्र को नेस्तनाबूत करने का गहरा षडयंत्र ?.....05
भारत की आबादी में बढ़ता असंतुलन.....07
यूरोपीय देशों में बढ़ रही संस्कृत के प्रति रुचि; किंतु भारत में ही उपेक्षा का दंश !.....09
युवा सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम हिन्दी.....10
भारत के 6 प्राचीन रहस्यमयी मार्ग.....11
'प्रभु के सहचर-रसाद्वैत संत' हनुमान प्रसाद पोद्दार.....12
रक्षाबंधन.....14
अखंड भारत संकल्प 15
एकल अन्तरराष्ट्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन.....16
अखण्ड भारत संकल्प दिवस.....17
समूह-चर्चा.....18
पाक विस्थापित शिविरों में स्वतंत्रता दिवस समारोह.....19
महामनस्वी पं. दीनदयाल उपाध्याय.....22
राष्ट्रभक्त इतिहासकार पुरूषोत्तम नागेश ओक 23
ताजमहल मकबरा या मंदिर, स्पष्ट करे मंत्रालय : केंद्रीय सूचना आयोग.....24
लिव-इन रिलेशनशिप सामाजिक आतंकवाद 25
ट्रिपल तलाक अर्थात् तलाक-ए-बिद्दत पर सुप्रीम रोक 26

मानवेन्द्र नाथ पंकज

मान. सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर वितंडावाद क्यों?

मान. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा केरल के चर्चित लव जेहाद प्रकरण पर मान. केरल उच्च न्यायालय के निर्णय को बरकरार रखते हुए एनआईए से जांच कराने के आदेश पर मजहब विशेष के स्वयंभू प्रवक्ताओं द्वारा वितंडावाद खड़ा किया जा रहा है जो भर्त्सनीय है; परन्तु उससे ज्यादा दुर्भाग्यपूर्ण तथाकथित प्रगतिशील समाज द्वारा दिए जा रहे बयान के साथ ही राष्ट्रवाद का स्वयंभू लम्बरदार का दावा करने वाले वर्ग की रहस्यमय चुप्पी परिलक्षित हो रही है।

कांग्रेस से सपा में पहुंचे एक स्थानीय नेता का बयान 'पहले मुसलमान, उसके बाद हिन्दुस्तानी : माबिया अली' **(देखें mjagran-16 aug.)** का विश्लेषण करें तो समस्या के बारे में सही सोच बनाई जा सकती है। केरल की हिन्दू युवती अखिला का मुस्लिम युवक से धर्मान्तरित कर निकाह कराने का मामला न तो वयस्क युवती का अपनी पसंद से निकाह या शादी या स्वेच्छया धर्मपरिवर्तन का प्रकरण है, न ही यह लव जेहाद है, जैसा लोग समझ रहे हैं या समझा रहे हैं?

अखिला के पिता अशोकन जनवरी, 2016 से पुलिस, मान. केरल उच्च न्यायालय के चक्कर लगा रहे हैं। मान. केरल उच्च न्यायालय ने इस बीच तीन बार इस प्रकरण पर निर्णय दिया है। इन निर्णयों को पढ़ने से स्थिति की भयावहता को महसूस किया जा सकता है।

मान. केरल उच्च न्यायालय की टिप्पणी दृष्टव्य है–'यदि कोई हिंदू लड़की किसी मुस्लिम लड़के से प्रेम–विवाह करती है तो उसमें कुछ भी गलत नहीं है। ऐसे कई मामले हमारे संज्ञान में अक्सर आते रहते हैं और अन्तर–धार्मिक विवाहों को हम कभी गलत नहीं मानते। लेकिन यह मामला प्रेम– विवाह का नहीं है। इस मामले में तो अखिला उस लड़के को जानती तक नहीं जिससे उसकी शादी हुई है।'

'अखिला द्वारा कही गई स्वेच्छया धर्मान्तरण की बात तथ्यों से साबित नहीं होती। साथ ही अखिला अपनी पहचान को स्पष्ट नहीं है। ऐसे में उसकी इच्छानुसार कहीं भी जाने देना उसके भविष्य के लिए खतरनाक हो सकता है। फिलहाल उसे सुरक्षा, देखभाल और अपने अभिभावकों के मार्गदर्शन की जरूरत है।... हम अपने परेंस पैट्रिआई क्षेत्राधिकार का प्रयोग कर रहे हैं। यह अदालत अपनी जिम्मेदारी तभी निभा सकती है जब हम सुनिश्चित करें कि अखिला सुरक्षित हाथों में हो।'

मान. सर्वोच्च न्यायालय द्वारा मोटी फीस लेने वाली 'सुख्यात' वकीलों के तर्कों के बावजूद मान. सर्वोच्च न्यायालय के अवकाश प्राप्त विद्वत न्यायमूर्ति की निगरानी में एनआईए को जांच सौंपे जाने पर वितंडावाद क्या मूल प्रकरण से ध्यान बंटाने तथा मान. विद्वत न्यायमूति को दबाव में लेने की चाल नहीं है।

ध्यान रहे लव जेहाद पर केरल उच्च न्यायालय, कर्नाटक उच्च न्यायालय तथा इलाहाबाद उच्च न्यायालय की टिप्पणी समय– समय पर आती रही हैं। जब जांच एनआईए को सौंप दी गई है तो जांच रिपोर्ट आए बिना प्रलाप किया जाना घोर अवसरवादिता कही जा सकती है।

केरल उच्च न्यायालय के निर्णय तथा प्रारंभिक जांच से पता चलता है, यह धर्मान्तरण का संगठित, सोचा– समझा षडयन्त्र है जो अन्ततः राष्ट्र की सार्वभौमिकता का क्षरण कर रहा है। इस निर्णय की तो बहुत चर्चा की जा रही है परन्तु दिल्ली की एक स्थानीय अदालत द्वारा नाबालिग किशोरी द्वारा इस्लाम को अपनाकर किए गए निकाह को बरकरार रखने की चर्चा भी नहीं की जा रही है। (देखें 'हिंदू विश्व' पृष्ठ 25, अगस्त 1– 15, 2017)

राष्ट्र को नेस्तनाबूत करने का गहरा षडयंत्र?

राहुल कोटियाल

हाल में केरल उच्च न्यायालय ने एक हिंदू लड़की और मुस्लिम लड़के का निकाह रद्द कर दिया था। अब सर्वोच्च न्यायालय ने एनआईए से इसकी जांच करने को कहा है।

कथित 'लव जिहाद' के एक मामले की इन दिनों देश भर में चर्चा है। सर्वोच्च न्यायालय ने हाल ही में इस मामले की जांच राष्ट्रीय सुरक्षा एजेंसी (एनआईए) को सौंप दी है। यह मामला मूलतः केरल का है। कुछ महीनों पहले केरल उच्च न्यायालय ने एक 24 वर्षीय हिंदू लड़की के एक मुस्लिम लड़के से हुए निकाह को रद्द कर दिया था। तभी से यह मामला चर्चाओं में आया। खबरें आईं कि उच्च न्यायालय ने इस निकाह को 'लव जिहाद' मानते हुए इसे रद्द करने का आदेश दिया है।

राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय अखबारों में न्यायालय के इस फैसले की जमकर आलोचना हुई। सवाल उठे कि एक बालिग लड़की यदि अपनी इच्छा से शादी करती है तो न्यायालय उसमें दखल कैसे दे सकता है। यह भी कहा गया कि न्यायालय ने इस निकाह को रद्द करके हिंदूवादी संगठनों द्वारा फैलाए गए 'लव जिहाद' के भ्रम पर मुहर लगा दी है।

ऊपरी तौर पर देखें तो केरल उच्च न्यायालय के फैसले पर उठ रहे ये तमाम सवाल बिलकुल वाजिब लगते हैं! 18 साल की उम्र से ऊपर की कोई भी लड़की अपनी इच्छा से किसी भी धर्म को अपनाने और किसी भी व्यक्ति से शादी करने को स्वतंत्र होती है। ऐसे में कोई न्यायालय अगर 24 साल की एक लड़की की स्वेच्छा से की गई शादी को अवैध करार देता है तो उस फैसले पर सवाल उठने स्वाभाविक ही हैं।

लेकिन इन सवालों का जवाब तलाशने के लिए अगर उच्च न्यायालय के लगभग सौ पन्नों के फैसले को पूरा पढ़ा जाए, तो साफ होता है कि यह मामला सिर्फ एक बालिग लड़की द्वारा स्वेच्छा से की गई शादी तक ही सीमित नहीं है। इस पूरे मामले को समझने की शुरुआत उन परिस्थितियों को जानने से करते हैं जिनके चलते यह मामला केरल उच्च न्यायालय पहुंचा था।

बात जनवरी 2016 की है। केरल के कोट्टयम जिले की रहने वाली अखिला की उम्र तब 23 साल थी और वह बीएचएमएस (बैचलर ऑफ होम्योपैथिक सर्जरी एंड मेडिसिन) की पढ़ाई कर रही थी। दो जनवरी को अखिला घर से अपने कॉलेज के लिए निकली लेकिन वहां पहुंची नहीं। तब अखिला के पिता अशोकन ने अपनी बेटी के गुमशुदा होने की रिपोर्ट स्थानीय थाने में दर्ज करवाई। कुछ दिन बाद अशोकन ने पुलिस को बताया कि उनकी बेटी को उसी के साथ पढ़ने वाली जसीना और फसीना नाम

न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी जिक्र किया कि अखिला के धर्मांतरण से जुड़े अधिकतर लोगों में यह समानता है कि वे सभी 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया' से जुड़े हुए हैं। इस पार्टी पर प्रतिबंधित संगठन सिमी से जुड़े होने के आरोप लगते रहे हैं।

हिंदू नामधारी एक फिल्मी कलाकार का बयान 'किससे सेक्स करना है, यह भी क्या तय किया जाएगा' पूरे प्रकरण को गलत दिशा दिया जाना कहा जा सकता है। सेक्स करना आपका अधिकार है; पर यह स्वेच्छया है, क्या यह सुनिश्चित नहीं किया जाना चाहिए। अपनी शारीरिक इच्छा परिवार, समाज व राष्ट्र की कीमत पर पूरी किया जाना किस प्रकार तर्कसंगत है? हाल में ही मजहबी युवकों की कामपिपासा का शिकार होकर रिया–हिना को दर्दनाक मौत मिली, इसके बावजूद 'एस' की चाह में 'मौत के अंधे कुएं में स्वयं को झोंकना' क्या बुद्धिमानी है?

कानून व्यवस्था के साथ ही राष्ट्र को खोखला करने वाली समस्याओं के विरुद्ध कठोर कदम उठाते हुए सख्त कानून बनाकर उसका अनुपालन सुनिश्चित कराना केन्द्र सरकार की जिम्मेवारी है। धर्मान्तरण–गोहत्या पर त्वरित निर्णय समय की आवश्यकता है।

(27 अगस्त)

की दो बहनों ने अपने पिता के साथ मिलकर अगवा कर लिया है।

अशोकन की शिकायत पर पुलिस ने कुछ लोगों को गिरफ्तार तो कर लिया लेकिन अखिला का अब भी कोई पता नहीं चला। इसके बाद अशोकन ने केरल उच्च न्यायालय में एक याचिका (हैबियस कॉरपस) दाखिल की। इस याचिका में उन्होंने बताया उनकी बेटी ने बीएचएमएस की पढ़ाई के लिए कुछ साल पहले तमिलनाडु के शिवराज होमियोपैथी मेडिकल कॉलेज में दाखिला लिया था। शुरुआती कुछ समय तक कॉलेज के हॉस्टल में रहने के बाद अखिला ने अपनी चार साथियों के साथ मिलकर एक किराए के कमरे में रहना शुरु कर दिया। इन चार साथियों में दो हिन्दू लड़कियां थी और दो मुस्लिम लड़कियां थी. इनमें से जसीना नाम की लड़की से अखिला की काफी अच्छी दोस्ती हो गई और वह अक्सर उसके घर आने–जाने लगी।

अपनी याचिका में अशोकन ने यह भी आरोप लगाए कि जसीना, उसकी बहन फसीना और उनके पिता अबुबकर ने मिलकर अखिला को बहकाया है और उसका जबरन धर्मांतरण करवा लिया है। इस याचिका की सुनवाई के दौरान न्यायालय ने पुलिस को आदेश दिए कि वह जल्द–से–जल्द अखिला का पता लगाए। इसके बाद अगली ही सुनवाई में अखिला न्यायालय पहुंच गई। उसने न्यायालय में हलफनामा दाखिल करते हुए बताया कि उसने सर्जरी के एक कोर्स में दाखिला ले लिया है जिसे पूरा करना बीएचएमएस के हर छात्र के लिए जरूरी होता है। (बाद में पाया गया कि अखिला के हलफनामे में कही गई यह बात झूठ थी और अखिला ने उस कोर्स में दाखिला नहीं लिया था।)

अखिला ने न्यायालय को यह भी बताया कि पढ़ाई के दौरान जब वह जसीना और फसीना के साथ रहा करती थी तो उन्हें नियमित नमाज पढ़ते देख वह बहुत प्रभावित हुई। इससे उसका इस्लाम की तरफ रुझान बढ़ा और उसने इस्लामिक किताबें पढना और इंटरनेट पर इस्लाम से जुड़े वीडियो देखना शुरु किया। धीरे–धीरे वह इस्लाम से इतनी प्रभावित हुई कि उसने खुद इस्लाम धर्म स्वीकारने का मन बना लिया। उसने बताया कि उसने एक इस्लामिक संस्था से इस्लाम की तालीम भी हासिल की है। 'सत्य सारणी' नाम की इस संस्था ने ही उसे सैनाबा नाम की एक महिला से मिलवाया था जिसके साथ अखिला कुछ दिनों तक रही भी। अखिला ने न्यायालय को बताया कि अब वह अपने माता–पिता के पास वापस नहीं लौटना चाहती।

अखिला की बातें सुनने के बाद न्यायालय ने माना कि एक बालिग लड़की के तौर पर उसे यह तय करने का अधिकार है कि वह कहां रहना चाहती है। लिहाजा न्यायालय ने उसके पिता की याचिका खारिज कर दी और अखिला को 'सत्य सारणी' में ही रहने की अनुमति दे दी। **('सत्य सारणी' संस्था इस्लाम का प्रचार–प्रसार करती है और इस संस्था पर कई बार जबरन धर्मांतरण करवाने के आरोप भी लग चुके हैं।)** न्यायालय ने अपने आदेश में यह भी कहा कि अखिला के माता–पिता समय–समय पर अखिला से मिलने संस्था में जा सकते हैं।

केरल उच्च न्यायालय के इस फैसले के लगभग सात महीने बाद, 16 अगस्त 2016 को अखिला के पिता ने एक और याचिका केरल उच्च न्यायालय में दाखिल की। इस याचिका में उन्होंने बताया कि बीते एक महीने अखिला कहां है इसकी उन्हें कोई जानकारी नहीं है। उन्होंने संदेह जताया कि जिस तरह बीते कुछ समय में केरल के कुछ युवाओं को आतंकवादी संगठनों में शामिल किया गया है उसी तरह अखिला को भी आईएस में शामिल करने के लिए सीरिया भेजा जा सकता है। उनका यह भी कहना था कि अबुबकर (जसीना और फसीना के पिता) ने अखिला का ब्रेनवाश करके उसका धर्मांतरण किया है और इस मामले में आतंकवादी संगठनों की भी भूमिका हो सकती है।

अशोकन की इस याचिका का संज्ञान लेते हुए केरल उच्च न्यायालय ने स्थानीय पुलिस को निर्देश दिए कि अखिला पर निगरानी रखी जाए और इस बात का ध्यान रखा जाए कि वह देश से बाहर न जाए। साथ ही न्यायालय ने सुनवाई जारी रहने तक अखिला को एक हॉस्टल में रहने के निर्देश दे दिए। लगभग 35 दिनों तक इस हॉस्टल में रहने के बाद अखिला के वकील ने न्यायालय से प्रार्थना की कि उसे अपनी इच्छानुसार रहने की अनुमति दे दी जाए। अखिला के वकील ने न्यायालय को यह भरोसा दिलाया कि हर सुनवाई पर अखिला नियमित रूप से न्यायालय पहुंच जाएगी। ऐसे में न्यायालय ने अखिला को उसकी इच्छा के अनुसार सैनाबा के साथ रहने की अनुमति दे दी। लेकिन न्यायालय ने यह भी निर्देश दिए कि इस बीच अगर अखिला कहीं और रहने का मन बनाती है तो उसे स्थानीय पुलिस को इसकी जानकारी देनी होगी।

अखिला के पिता अपनी इकलौती बेटी के अचानक हुए धर्मांतरण से तो परेशान थे ही, वे इसलिए भी चिंतित थे कि उनकी बेटी सैनाबा नाम की एक बिलकुल अनजान महिला पर उनसे ज्यादा विश्वास कर रही थी और उसी के साथ रहने लगी थी। अशोकन को अपनी बेटी की पढ़ाई की भी चिंता थी जिसके लिए उन्होंने बैंक से कर्ज भी लिया था। लिहाजा अगली ही सुनवाई में उन्होंने न्यायालय को बताया कि अखिला ने अब तक सर्जरी के उस कोर्स में दाखिला नहीं लिया है जिसे पूरा करना बीएचएमएस के हर छात्र के लिए जरूरी होता है। इस कोर्स को पूरा किये बिना अखिला एक होम्योपैथिक डॉक्टर के रूप में प्रैक्टिस नहीं कर सकती थी।

अखिला की पढ़ाई को लेकर उसके पिता की चिंता को न्यायालय ने बिलकुल जायज माना। न्यायालय ने यह भी कहा कि अखिला के भविष्य के लिए

शेष पृष्ठ 20 पर.....

अगली सुनवाइयों में न्यायालय ने पाया कि इस मामले में शामिल कई लोग ऐसे हैं जिन पर पहले भी जबरन धर्मांतरण के आरोप लग चुके हैं। साथ ही जिस शफीन जहां से अखिला की शादी हुई थी, वह व्यक्ति पहले कभी अखिला से नहीं मिला था।

भारत की आबादी में बढ़ता असंतुलन

श्रीशचंद्र मिश्र

पिछले काफी समय से ईसाई मां की संतानों की संख्या अन्य धर्मों की तुलना में ज्यादा रहती आई हैं। पियू रिसर्च सेंटर की माने तो 2035 तक मुस्लिम मां की संतानें इस होड़ में सबसे आगे होगीं। सेंटर का आकलन है कि नबंर की दौड़ में कोई भी आगे रहे। ईसाई और मुस्लिम संतानें संख्या के लिहाज से भविष्य में दुनिया के कुल शिशुओं में करीब तीन–चौथाई हो जाएगी। सन् 2010 से 2015 के बीच दुनिया में जितने शिशुओं का जन्म हुआ उनमें से 66 फीसद की मां ईसाई या मुस्लिम थी। 2055 से 2060 के बीच यह आंकड़ा 71 फीसद का रहेगा। सेंटर का आकलन है कि 2015 से ईसाई व मुस्लिम मां ज्यादा संतानों को जन्म दे रही हैं।

2060 तक दोनों के बीच करीब साठ लाख का फर्क आ जाएगा। 22 करोड़ 60 लाख ईसाई शिशुओं की संख्या की तुलना में तब मुस्लिम शिशुओं की संख्या 23 करोड़ बीस लाख हो जाएगी। सेंटर की रिपोर्ट बताती है कि अन्य धर्मों की संतानों की संख्या 2015 से 2060 की बीच तेजी से गिरेगी। ज्यादा गिरावट हिंदुओं में आएगी। 2010 से 2015 की तुलना में 2055 से 2060 की बीच हिंदू संतानों की संख्या तीन करोड़ तीस लाख कम हो जाएगी। दुनिया में बढ़ती आबादी पर चिंतन और विमर्श का नजरिया बदल रहा है। अब इस आधार पर आकलन हो रहा है कि आने वाले सालों में किस धर्म को मानने वालों की संख्या ज्यादा होगी। भारत में जब भी बढ़ती आबादी में धार्मिक अनुपात असंतुलित होने की बात कही जाती है तो उसे सांप्रदायिक विद्वेष फैलाने का प्रयास करार दे दिया जाता है।

बहरहाल 2015 के तीन महीने में धार्मिक पहचान के आधार पर दो रिपोर्ट सामने आई है। 2011 में हुई जनगणना के जिन आंकड़ों को धार्मिक आधार पर अलग–अलग किया गया है, उसके मुताबिक 2001 की तुलना में 2011 में मुस्लिम आबादी 24 फीसद बढ़ी और कुल जनसंख्या में उसका हिस्सा 13.4 फीसद हो गया। दशक के आधार पर विश्लेषण करें तो 2001 से 2011 के बीच मुस्लिम आबादी बढ़ने की रफ्तार 1991 से 2001 के दशक के 29 फीसद से कम जरूर रही। फिर भी 2001 से 2011 के बीच अन्यों की आबादी 18 फीसद की दर से ही बढ़ी।

उधर अमेरिका के एक शोध संस्थान का आकलन है कि 2050 तक दुनिया भर में आबादी बढ़ने की सबसे तेज रफ्तार मुसलमानों की होगी। शोध में बताया गया था कि 2050 तक भारत हिंदू बहुल देश तो बना रहेगा लेकिन दुनिया में सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी अगर कहीं होगी तो वह भारत में होगी। अभी इंडोनेशिया सबसे ज्यादा मुस्लिम आबादी वाला देश है। 2050 में भारत उसे पीछे छोड़ सकता है।

अमेरिकी शोध संस्थान का मानना था कि 35 साल में हिंदू और ईसाई आबादी मुस्लिम आबादी बढ़ने की रफ्तार से कदम ताल नहीं मिला पाएगी। हालांकि अध्ययन में माना गया था कि अगले कम से कम चार दशक तक दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी ईसाइयों की ही रहेगी। लेकिन 2050 में ईसाई और मुस्लिम आबादी इतिहास में पहली बार लगभग बराबरी पर आ जाएंगी। तब 280 करोड़ मुसलमान दुनिया की आबादी का 30 फीसद होंगे और ईसाई 290 करोड़ के साथ 31 फीसद। 2010 में दुनिया में मुस्लिम आबादी 160 करोड़ थी और ईसाई आबादी 217 करोड़। अध्ययन का मानना था 2070 तक इस्लाम को मानने वाले दुनिया में सबसे ज्यादा हो सकते हैं।

रिपोर्ट के मुताबिक तक हिंदुओं की अभी के करीब सौ करोड़ से बढ़ कर 140 करोड़ ही हो पाएगी और हिस्सा महज 14.9 फीसद होगा। धर्म के आधार पर बढ़ रही आबादी के संदर्भ में पियू रिसर्च सेंटर ने एक और तस्वीर पेश की है। सेंटर का मानना है कि 2010 से 2015 के बीच मुसलिम आबादी दुनिया भर में पंद्रह करोड़ से ज्यादा बढ़ी। 2015 से 2060 के बीच मुसलिम आबादी 70 फीसद बढ़ने का अनुमान है। 2070 तक इस्लाम को मानने वाले दुनिया में सबसे ज्यादा हो जाएगें।

रिपोर्ट का निचोड़ है कि 80 फीसद भारतीय सामाजिक कल्याण के कामों के लिए दान नहीं देते। ऐसे कामों के लिए समय देने में भी 83 फीसद भारतीय कोताही बरतते हैं।

धर्मनिरपेक्षता की व्याख्या को लेकर भारत में हमेशा वैचारिक बहस चलती रही है। राजनीति चमकाने का भी यह सबसे आसान जरिया है। लेकिन धर्म को लेकर सबसे ज्यादा आस्था अगर दुनिया में कहीं है तो भारत में। यह इतनी विस्तृत है कि आबादी के अनुपात में स्कूल, कालेज या अस्पताल ही नहीं शौचालय तक भले ही कम हो लेकिन पूजा स्थलों की भरमार है।

हर धर्म सामंजस्यता और भाईचारे की सीख देता है और उन्हें बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है। लेकिन धर्म में इतनी गहरी और व्यापक आस्था होने के बावजूद मानवीय मोर्चे पर भारतीय म्यांमार, भूटान, थाइलैंड और मलेशिया तक के लोगों से काफी पीछे है। छह साल में पहली बार उन देशों की रैंकिंग जारी की गई है जहां के लोग दान देने, दूसरों की मदद करने और परमार्थ में समय देने में विशेष रुचि रखते हैं। रिपोर्ट का निचोड़ है कि 80 फीसद भारतीय सामाजिक कल्याण के कामों के लिए दान नहीं देते। ऐसे कामों के लिए समय देने में भी 83 फीसद भारतीय कोताही बरतते हैं।

देश में हर एक हजार परिवारों के लिए औसतन 12.1 पूजा स्थल हैं। केंद्रशासित प्रदेश लक्षद्वीप में तो यह औसत 40.4 है। उसकी तुलना में चंडीगढ़ में हर एक हजार परिवारों के लिए 1.9 पूजा स्थल हैं। राष्ट्रीय औसत से नीचे तो गिने चुने राज्य केंद्र शासित प्रदेश ही हैं। राजधानी दिल्ली में यह औसत 2.5 है। दादरा और नगर हवेली में 5.6, हरियाणा में 6.9, पुडुचेरी में 7.6, नगालैंड में 8.1 और बिहार में 8.80 पूजा स्थल ही एक हजार परिवारों के लिए हैं। इस अध्ययन का सबसे दिलचस्प पहलू यह है कि जिन राज्यों की धर्मनगरी के रूप में ख्याति है वहां आबादी की तुलना में पूजा स्थल कम हैं। उत्तराखंड को देवभूमि माना जाता है। वहां हर एक हजार परिवारों के लिए 16.4 पूजा स्थल हैं जबकि पड़ोसी राज्य हिमाचल प्रदेश में यह औसत 25.8 का है। उत्तर प्रदेश में तो यह राष्ट्रीय औसत से भी कम 10.7 का है। मध्य प्रदेश का औसत 11.3, झारखंड का 10.3 और महाराष्ट्र का 11.5 है।

कुछ दक्षिणी राज्य धर्म के प्रति आस्था के मामले में काफी आगे माने जाते हैं। वहां विभिन्न धर्मों की प्रतीक प्राचीन व भव्य इमारतें तो हैं लेकिन गली–गली में पूजा स्थलों का बिखराव नहीं है। आंध्र प्रदेश में एक हजार परिवारों के लिए 9.1 और आंध्र प्रदेश में 9.2 पूजा स्थल पर्याप्त मान लिए गए हैं। कर्नाटक में यह औसत आश्चर्यजनक रूप से 16.5

अमेरिकी शोध संस्थान का मानना था कि 35 साल में हिंदू और ईसाई आबादी मुस्लिम आबादी बढ़ने की रफ्तार से कदम ताल नहीं मिला पाएगी।

का है। सबसे ज्यादा शिक्षित व प्रगतिशील और कम्युनिस्ट विचारधारा से ज्यादा प्रभावित केरल में एक हजार परिवारों को अपने धार्मिक अनुष्ठान निपटाने के लिए 13.5 पूजा स्थल उपलब्ध है। राज्य में सरकार किसी भी विचारधारा की रही हो, धर्म के प्रति लोगों की आस्था खुरच नहीं पाई। पश्चिम बंगाल में बरसों वामपंथी शासन रहा लेकिन वहां के पूजा स्थलों का औसत 12.7 रहा। अध्ययन में धर्म के आधार पर पूजा स्थलों की संख्या का खुलासा नहीं किया गया है लेकिन मंदिर–मस्जिद की संख्या में आम तौर पर ज्यादा फर्क नहीं दिखता। जिन राज्यों में अल्पसंख्यक आबादी की बहुलता है वहां के पूजा स्थलों में किस धर्म को मानने वालों की प्रधानता है, उसका अंदाजा लगाना मुश्किल नहीं है।

असम में एक हजार परिवार पर 25, जम्मू कश्मीर में 23.3, मिजोरम में 17.4, गोवा में 17.5, अंडमान निकोबार द्वीप समूह में 15.9, अरुणाचल प्रदेश में 12.9, मेघालय में 12.8, त्रिपुरा में 12.2 पूजा स्थल हैं जो राष्ट्रीय औसतम से ज्यादा है। लेकिन समानुपातिक नहीं है। हिंदीभाषी राज्यों में राजस्थान (17.7) का औसतम चौंकाने वाला है। गुजरात में यह 14.9 और ओडिशा में 13.9 है। दुनिया के किसी अन्य देश की तुलना में भारत में पूजा स्थलों की बहुतायत की वजह देश की सांस्कृतिक विविधता है। यह विविधता एकता का सबसे बड़ा आधार हो सकती है, लोगों की जीवन शैली और सोच को उदारवादी बना सकती है।

(30 जुलाई)

जम्मू-कश्मीर सरकार तीन महीने में गैर-मुस्लिमों के अल्पसंख्यक दर्जे पर निर्णय ले : उच्चतम न्यायालय

जम्मू–कश्मीर में गैर–मुस्लिमों के अल्पसंख्यक दर्जे को लेकर राज्य सरकार के रुख पर उच्चतम न्यायालय ने सख्त नाराजगी जताई है। समाचार एजेंसी एएनआई के अनुसार, उच्चतम न्यायालय ने राज्य सरकार को अंतिम अवसर देते हुए इस मामले में तीन महीने में उत्तर मांगा है। न्यायालय ने इससे पहले राज्य सरकार को एक समिति बनाकर अल्पसंख्यक दर्जे से जुड़ी विसंगतियां दूर करने का निर्देश दिया था। परंतु, राज्य सरकार ने कहा कि, कानून–व्यवस्था ठीक न होने के कारण से इस मामले में बैठक ही नहीं हो पाई है। इस पर नाराजगी जताते हुए शीर्ष न्यायालय ने कहा कि, यह उत्तर न्यायालय का अपमान और मजाक उड़ाने जैसा है।

उच्चतम न्यायालय जम्मू–कश्मीर में गैर–मुस्लिमों के अल्पसंख्यक दर्जे का विवाद सुलझाने के लिए केंद्र और राज्य सरकार दोनों को लगातार निर्देश दे रहा है। इसी वर्ष फरवरी में शीर्ष न्यायालय ने इससे जुड़ी जनहित याचिका पर उत्तर न देने के कारण से केंद्र पर ३०,००० रुपये का जुर्माना लगाया था। इस याचिका में यह सवाल भी उठाया गया है कि, जम्मू–कश्मीर में मुस्लिमों को धार्मिक और भाषायी अल्पसंख्यकों का लाभ मिल रहा है, जबकि वे बहुसंख्यक हैं। इस याचिका में राज्य में अल्पसंख्यक आयोग बनाने और राष्ट्रीय अल्पसंख्यक आयोग को यहां तक विस्तार देने का आदेश देने की मांग की गई है। (सत्याग्रह, 9 अगस्त)

यूरोपीय देशो में बढ़ रही संस्कृत के प्रति रुचि किंतु भारत में ही उपेक्षा का दंश !

भारत में लगातार संस्कृत शिक्षा की उपेक्षा हो रही है। वर्तमान सरकार ने पिछले तीन वर्षों में काफी कुछ प्रयास किए हैं, परंतु संस्कृत को लेकर जो "नकारात्मक छवि" गढ़ दी गई है और कॉन्वेंट संस्कृति की अंग्रेजी शिक्षा ने गांव–गांव में अपने पैर पसारे हैं, उसके कारण संस्कृत का माहौल विद्यालय स्तर से ही खराब बना हुआ है !

उधर यूरोप के प्रमुख देश जर्मनी में पिछले कुछ वर्षों से संस्कृत को लेकर जो रुचि उत्पन्न होनी शुरु हुई थी, वह अब लगभग सच्चाई में परिवर्तित हो चुकी है ! सरलता से विश्वास नहीं होता, परन्तु यही सच है कि वर्तमान में जर्मनी के १४ विश्वविद्यालयों में संस्कृत और भारतीय विद्याओं पर न केवल पढ़ाई चल रही है, बल्कि इसके लिए बाकायदा अलग से विभाग गठित किए गए हैं। इसी प्रकार ब्रिटेन के चार विश्वविद्यालय संस्कृत की पढ़ाई जारी रखे हुए हैं।

यूनिवर्सिटी ऑफ हेडेलबर्ग के प्रोफेसर अक्सेल माइकल्स बताते हैं कि, जब १५ वर्ष पहले हमने संस्कृत विभाग शुरु किया था, तो दो–तीन वर्षों में ही उसे बन्द करने के बारे में सोचने लगे थे। जबकि आज की स्थिति यह है कि, संस्कृत की पढ़ाई करने के इच्छुक यूरोपीय देशों से हमें इतने आवेदन मिल रहे हैं कि, हमें उन्हें मना करना पड़ रहा है कि, स्थान खाली नहीं है ! अभी तक ३४ देशों के २५४ छात्र संस्कृत का कोर्स कर रहे हैं और यह संख्या प्रतिवर्ष बढ़ती ही जा रही है !

जर्मनी के एक विश्वविद्यालय में चल रही संस्कृत की कक्षा

प्रोफेसर माईकील्स के अनुसार, किसी भाषा को किसी राजनैतिक विचारधारा अथवा जातीयता से जोड़ देना नितांत बेवकूफी ही कही जाएगी। संस्कृत जैसी समृद्धशाली भाषा की उपेक्षा रोकना भारत की जिम्मेवारी है ! वे आगे कहते हैं कि, बौद्ध पंथ के मूल विचार भी संस्कृत में ही हैं। सृष्टि के इतिहास, भाषा विज्ञान एवं संस्कृति को समझने के लिए संस्कृत को पढ़ना और समझना बेहद जरूरी है।

इटली से आए फ्रेंसेस्का लुनेरी नामक उन्हीं के एक छात्र, जो कि मेडिकल की पढ़ाई कर रहे हैं, का कहना है कि मैं मनोचिकित्सा में शोध कर रहा हूँ तथा मुझे बंगाल के गिरीन्द्र शेखर बोस के लिखे हुए मूल बांग्ला शोधपत्रों एवं पुस्तकों को पढ़ने के लिए, पहले संस्कृत सीखने जा रहा हूँ, क्योंकि यही मूल भाषा है। उनका कहना है कि राजनीति एवं अर्थशास्त्र को बेहतर तरीके से समझने के लिए हमें चाणक्य लिखित संस्कृत के मूल अर्थशास्त्र को पढ़ना बेहद जरूरी है!

कानपुर आयआयटी से गणित में स्नातक आनंद मिश्रा अगले सेमेस्टर में यहां उपनिषद की कक्षाएं आरम्भ करने जा रहे हैं, जबकि पाणिनि के संस्कृत व्याकरण से सम्बन्धित कुछ प्रोजेक्ट्स अन्य यूरोपीय विश्वविद्यालयों में विचाराधीन हैं, ताकि उन्हें भी आरम्भ किया जा सके। इसे लेकर यूरोप के भाषा–विज्ञानियों में खासा उत्साह है ! प्रोफेसर माईकल्स कहते हैं कि क्या आप अपने पुरातत्व वस्तुओं, प्राचीन महलों, अजंता, कोणार्क, हम्पी जैसे ऐतिहासिक स्मारकों का संरक्षण नहीं करते हैं ? तो फिर आप लोग भारत में होकर भी विश्व सभ्यता की सबसे पहली वैज्ञानिक और समृद्ध भाषा का संरक्षण करने में कोताही क्यों बरत रहे हैं ? हारवर्ड, कैलिफोर्निया और इंग्लैण्ड के अन्य विश्वविद्यालयों में संस्कृत के अधिकांश प्रोफेसर हम जर्मन लोग हैं। रेडियो पर संस्कृत भाषा में सबसे पहले समाचार पढ़ना भारत से भी पहले, हमारे जर्मनी के "रेडियो डायचे वैले" ने शुरु किया था!

> *संस्कृत क्यों? इसका उत्तर देने से पहले हमें संस्कृत के गुणों पर ध्यान देना होगा। अपनी आवाज की सुमधुरता, उच्चारण की शुद्धता और रचना के सभी आयामों में संपूर्णता के कारण यह सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है! यही कारण है कि अन्य भाषाओं की भांति मौलिक रूप से कभी भी इसमें पूरा परिवर्तन नहीं हुआ। मनुष्य के इतिहास की सबसे पूर्ण भाषा होने के कारण इसमें परिवर्तन की कभी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी !"*
>
> – Rutger Kortenhost-
> (आयरलैंड के एक विद्यालय में संस्कृत विभाग के अध्यक्ष)

आयरलैंड के एक विद्यालय में संस्कृत के विभाग अध्यक्ष हैं, Rutger Kortenhost, उन्होंने वहां के पालकों के साथ एक मीटिंग में जो विचार व्यक्त किए हैं। उन्हें पढ़िए। कोर्तेन्होस्ट संस्कृत के बारे में विस्तार से बताते हैं, और हमारी आँखें खुली की खुली रह जाती हैं।

"देवियों और सज्जनों, हम यहां एक घंटे तक साथ मिल कर यह चर्चा करेंगे कि जॉन स्कॉट्टस विद्यालय में आपके बच्चे को संस्कृत क्यों पढ़ना चाहिए ? मेरा दावा है कि इस घंटे के पूरे होने तक आप इस निष्कर्ष पर पहुंचेंगे, कि आपका बालक भाग्यशाली है जो संस्कृत जैसी असाधारण भाषा उसके पाठ्यक्रम का हिस्सा है ! सबसे पहले हम यह विचार करते हैं कि संस्कृत क्यों पढ़ाई जाए ? आयरलैंड में संस्कृत को पाठ्यक्रम में शामिल करनेवाले हम पहले विद्यालय हैं। ग्रेट ब्रिटेन और विश्व के अन्य हिस्सों में जॉन स्काट्टस के ८० विद्यालय चलते जहां संस्कृत को

शेष पृष्ठ 25 पर....

सुभाषित

अन्तः तृष्णोपतप्तानां दावानलमयं जगत्।
भवति अखिल-जन्तूनां यदन्तः तद्वहिः स्थितम्।।

जिन लोगों का हृदय तृष्णा के ताप से जल रहा है, उनके लिए यह सारा जग ही दावानल के समान है। सभी प्राणियों के अंतर में जैसा होता है, वैसा ही बाहर भी बोध होता है।

हिन्दी दिवस–14 सितम्बर पर विशेष

युवा सशक्तिकरण का सशक्त माध्यम हिन्दी

ओमप्रकाश दुबे

यदि भारत का उत्थान करना है तो युवा सशक्तिकरण अति आवश्यक है। युवा सशक्तिकरण का माध्यम ऐसा हो जो पूरे भारत में अधिकाधिक लोगों द्वारा समझी और बोली जाती हो। देश को स्वाधीन रखना है तो स्वाधीन जनमानस चाहिए। स्वाधीन जनमानस बनाना है तो स्वाधीन साहित्य राष्ट्रभाषा में चाहिए। स्वाधीन साहित्य सृजन के लिए भारतीय ज्ञान परंपरा, भारतीय इतिहास की समझ, स्वानुभव, प्रतिभा और कौशल अनिवार्य है। सहज और मौलिक चिंतन की सर्वाधिक संभावनाएं परिवेश की भाषा में निहित होती है। अधिकतर युवा जो आज

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

हिंदी अन्तरराष्ट्रीय भाषा है तथा इसके बोलने और समझने वाले लोगों की संख्या के अनुसार विश्व में इसका दूसरा स्थान है।

हाशिए पर हो रहे हैं, उनका सशक्तिकरण देश के विकास के लिए आवश्यक है। इन युवाओं का सशक्तिकरण उनकी मूलभूत सुविधाओं के परिवेश की भाषा यानि मातृभाषा और राष्ट्रभाषा हिंदी में कराना सरकार और समाज का दायित्व बन जाता है।

सशक्ति के कई पहलू होते हैं। भाषा उन सभी पहलुओं से प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से संबोंधित होती है। भाषा का सबसे महत्वपूर्ण योगदान एक दूसरे को जानने और समझने के लिए होता है। हिंदी जो भारत की सर्वाधिक लोगों द्वारा प्रयोग की जानेवाली भाषा है। वह युवाओं को सांस्कृतिक प्रवाह से जोड़े रख सकती है और उन्हें आत्मबल देने में महत्वपूर्ण साधन बन सकती है। हिंदी शैक्षणिक दृष्टि से भारत के जनमानस के लिए सुलभ और समावेशी शिक्षा का आधार बन सकती है। स्वास्थ्य संबंधी जटिलताओं को सुबोध बनाकर सजगता को बड़ा सकती है। आर्थिक परिदृश्य को अधिक विस्तृत और लोकप्रिय बनाने का काम कर सकती है।

उदाहरण के लिए अंग्रेजी में लिखे संदेश सामान्य युवाओं की समझ के बाहर होते हैं। यदि यही संदेश राष्ट्रीय स्तर पर हिंदी में और स्थानीय स्तर पर भारतीय भाषाओं में संप्रेषित किए जाएं तो युवाओं को अपनी समस्या का निदान करने में आसानी होगी। अपनी भाषा में सामग्री उपलब्ध होने पर युवा अपनी ऊर्जा विषय को समझने में लगाता है। जबकि विदेशी भाषा में सामग्री उपलब्ध होने पर विद्यार्थी की ऊर्जा और बुद्धि का बड़ा भाग भाषा को समझने में ही खर्च हो जाता है। इसके कारण विषय पर आवश्यक पकड़ नहीं बन पाती। फलतः विद्यार्थी प्रतिस्पर्धा में पीछे रह जाता है।

यह दुर्भाग्यपूर्ण किंतु कटु सत्य है कि आज अभिभावक अपने बच्चों को अंग्रेजी माध्यम के विद्यालय में पढ़ाने को प्रमुखता देते हैं। इसके कारण उच्च शिक्षा में अंग्रेजी का महत्व अधिक है। यदि उच्च शिक्षा में हिंदी और भारतीय भाषाओं का प्रयोग अधिक हो जाए तो सर्वाधिक लाभ आज के हाशिये पर रह रहे युवाओं को होगा। भारत में कुछ लोगों का मत है कि हम बिना अंग्रेजी के अपना सशक्तिकरण नहीं कर सकते, यह सामान्य जनमानस को बहिष्कृत करने का एक षडयंत्र है। विश्व में अनेक विकसित देश है, जिन्हें अपनी भाषा में बिना अंग्रेजी के प्रगति किया है। यह विचारणीय प्रश्न है कि यदि फ्रांस, जर्मनी, जापान तथा अन्य अनेक देश अपनी भाषा में प्रगति कर सकते हैं तो भारत क्यों नहीं? लेकिन निहित स्वार्थ, अंग्रेजी के मोह तथा अभिजात्य वर्ग के दुराग्रह के कारण सरकार और समाज आज तक हिंदी का देश के युवाओं के सशक्तिकरण के लिए उपयोग नहीं कर सकी है।

हिंदी अन्तरराष्ट्रीय भाषा है तथा इसके बोलने और समझने वाले लोगों की संख्या के अनुसार विश्व में इसका दूसरा स्थान है। पहले स्थान पर चाइनीज भाषा माण्डारिन है। विश्व के अनेक देशों के विश्वविद्यालय तथा अन्य शिक्षण संस्थाओं में हिंदी का अध्ययन एवं अध्यापन होता है। भारतीयों के अलावा विदेशी भी हिंदी में अभिरूचि रखते हैं। आज अन्तरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी के पठन– पाठन, व्यवहार, प्रगति तथा उससे संबंधित समस्याओं पर चर्चा होती है। समय– समय पर विभिन्न देशों में अन्तरराष्ट्रीय हिंदी सम्मेलनों का आयोजन हुआ है तथा अन्तरराष्ट्रीय स्तर की संगोष्ठियां आयोजित होती हैं। हिंदी को एक महत्वपूर्ण भाषा के रूप में स्थापित करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ तथा अन्य अन्तरराष्ट्रीय संगठनों में उचित स्थान मिले, इसका भी प्रयास हो रहा है।

विश्व के जिन देशों में भारत की संस्कृति के विषय में रुचि रहती है, वहां बहुत पहले से हमारे धर्मग्रंथों, भारतीय दर्शन, संस्कृत, हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं का अध्ययन होता रहा है। भारत के स्वाधीन होने के पश्चात् भारतीय भाषाओं के अध्ययन का क्षेत्र और विस्तृत हुआ है। किसी भी देश की भाषा का प्रयोग यदि उस देश के भीतर होने के अलावा अन्य देशों में भी हो तो यह उस भाषा के लोगों के लिए गर्व की बात होती

शेष पृष्ठ 17 पर....

भारत के 6 प्राचीन रहस्यमयी मार्ग

अनिरुद्ध जोशी 'शतायु'

गतांक से आगे...

तब हनुमान जी को अहिरावण तक पहुंचने के लिए पातालपुरी के रक्षक मकरध्वज को परास्त करना पड़ा था। रामकथा के अनुसार अहिरावण वध के बाद भगवान राम ने वानर रूप वाले मकरध्वज को ही पातालपुरी का राजा बना दिया था, जिसे पाताल पुरी के लोग पूजने लगे थे। इस प्राचीन शहर की खोज अमेरिकी वैज्ञानिकों की टीम ने लीडर नामक तकनीक से की, जो जमीन के नीचे की 3–D मैपिंग दिखाती है। इस शहर की पहली पुख्ता जानकारी 1940 में अमेरिकी खोजकर्ता थियोडोर मोर्डे ने एक अमेरिकी मैगजीन में दी थी। उस लेख में लिखा था कि इस प्राचीन शहर के लोग एक वानर देवता की पूजा करते थे परन्तु लेख में उस स्थान का खुलासा नहीं किया गया था। कुछ समय बाद में रहस्यमय परिस्थितियों में खोजकर्ता थियोडोर की मौत हो गई जिससे प्राचीन शहर की खोज अधूरी रह गई।

इसके करीब 7 दशक बाद लाइडार तकनीक की मदद से होंडूरास के घने जंगलों के बीच मस्कीटिया नामक इलाके में प्राचीन शहर के निशान मिलने शुरु हुए हैं। अमेरिका के ह्यूस्टन यूनिवर्सिटी नेशनल सेंटर फॉर एयरबोर्न लेजर मैपिंग ने होंडूरास के जंगलों के ऊपर आधुनिक वैज्ञानिक उपकरणों की मदद से प्राचीन शहर के निशान को खोज निकाला है।

लाइडार तकनीक की मदद से जो थ्री–डी नक्शे मिले है, उसका अध्ययन करने पर जमीन के नीचे एक प्राचीन शहर की मौजूदगी का पता चलता है साथ ही साथ जंगलों की जमीन की गहराइयों में मानव निर्मित कई वस्तुओं के भी साक्ष्य मिले है।

इस दरवाजे में क्या कोई रहस्यमयी रास्ता है?

भारत के केरल में सन् 2011 में श्रीपद्मनाभ स्वामी मंदिर की सुरक्षा उस वक्त कड़ी कर दी गई जब यहां सर्वोच्च न्यायालय के आदेश पर मंदिर के तहखाने में बने पांच खुफिया दरवाजे खोल दिया जो सदियों से बंद थे।

और हर दरवाजे के पार उन्हें सोना और चांदे के अंबार मिलते गए जिनकी कीमत करीब 22 सौ करोड़ डॉलर थी। लेकिन जब वे अन्तिम चेम्बर बी पर पहुंचे तो वे उसे खोलने में नाकाम हो गए।

वहां तीन दरवाजे हैं। पहला दरवाजा लोहे की झड़ों से बना दरवाजा है। वेबदुनिया के शोधानुसार दूसरा लकड़ी से बना एक भारी दरवाजा है और अंतिम दरवाजा लोहे का बना बड़ा ही मजबूत दरवाजा है, जो बंद है और उसे खोला नहीं जा सकता क्योंकि उसे पर लोहे के दो नाग बने हैं और वहां चेतावनी लिखी है कि इसे खोला गया तो अंजाम बहुत बुरा होगा।

इस पर न तो ताले लगे हैं और न ही कोई कुंडी। कहा जाता है कि उसे एक मंत्र से बंद किया गया है। उसे कहते हैं अष्टनाग बंधन मंत्र। मगर वो मंत्र क्या है ये कोई नहीं जानता। वह चेम्बर एक अनोखे शाप से ग्रस्त है। यदि कोई भी उसे चेम्बर के दरवाजे तक जाने का प्रयास करता है तो वह बीमार हो जाता है या उसकी मौत भी हो सकती है।

17 जुलाई 2011 में पहले पांच कक्षों को खोलने के बाद ही टी.पी सुंदरराजन यानी वे शख्स जिन्होंने इन दरवाजों को खुलवाने के लिए अदालत में याचिका दी थी, पहले वे बीमार पड़े और फिर उनकी मौत हो गए। अगले ही महीने मंदिर प्रशासन ने यह चेतावनी जारी कर दी की यदि किसी ने भी उस अंतिम कक्ष को खुलवाने या खोलने की कोशिश की तो अंजाम बहुत बुरा होगा।

सबसे बड़ा सवाल यही है कि चेम्बर बी के दरवाजे के पीछे आखिर क्या रखा है? अपार सोना, कोई खतरनाक हथियार या कि प्राचीन भारत की कोई ऐसी टेक्नोलॉजी का राज छुपा है जिसे जानकर दुनिया हैरान रह सकती है। यह कहीं ऐसा तो नहीं कि वहां कोई ऐसा रास्ता हो जहां से पाताल लोग में जाया जा सकता हो?

कुरुक्षेत्र की सुरंग

महाभारत की भूमि के प्राचीन कुलतारण तीर्थ किनारे प्राचीन सुरंग बनी हुई है। यह सुरंग भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के लिए अभी भी रहस्यमयी बनी हुई है। धर्मनगरी कुरुक्षेत्र से 48 कोस की परिधि के एक ओर गांव किरमच में स्थित तीर्थ कुलतारण की सुंरग पर शोध जारी है। पुरातत्व विभाग ने सालों से बंद पड़ी इस सुरंग के कई चित्र और नमूने लेकर इस संबंध में एक रिपोर्ट केंद्र को भेजी है।

48 कोस की परिधि के इस तीर्थ का पुराना इतिहास है, बताया जाता है कि पांडुओं की अस्थियां इसी कुलतारण तीर्थ में विसर्जित की गई थी। तब से इस क्षेत्र के लोग अस्थियों को इस तीर्थ में ही विसर्जित करते है। शोधानुसार यहां पर रामकुंडी मंदिर, भगवान शिव का मंदिर में स्थित है। इस तीर्थ का अपना एक प्राचीन इतिहास रहा है। ऐसा पूर्वजों से सुनते आए है, इस क्षेत्र के लोग इस तीर्थ को काफी मानते है। इस तीर्थ पर हर वर्ष मेला लगता है और दूर दराज से लोग इस मेले में शामिल होने के लिए यहां आते है।

शेष पृष्ठ 18 पर....

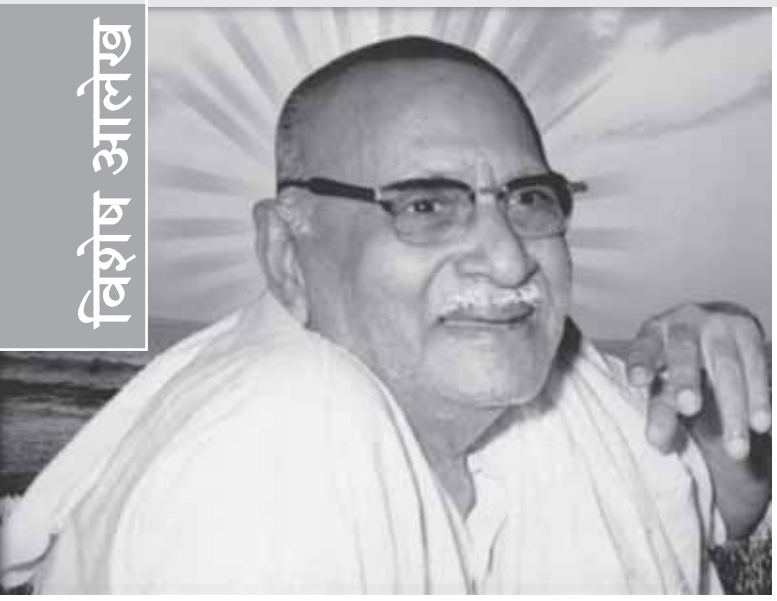

125वीं जयन्ती वर्ष पर विशेष

'प्रभु के सहचर-रसाद्वैत संत' हनुमान प्रसाद पोद्दार

रेणु राजवंशी गुप्ता

भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी को हम प्रायः गीता प्रेस से जुड़ा हुआ या कल्याण के यशस्वी सम्पादक के रूप में जानते हैं। ''गीता प्रेस'' की स्थापना तो पूजनीय सेठ जी (श्री जयदयाल गोयन्दका जी) ने की थी, परन्तु उसका पोषण एवं संवर्द्धन भाई जी ने लगभग 45 वर्षों तक किया था। उनके ही मार्गदर्शन में श्रीमद्भगवद् गीता, रामचरित मानस एवं श्रीमद्भागवद महापुराण के साथ – साथ हिन्दू वांग्मय के अनेक ग्रंथों का प्रामाणिक प्रकाशन गीता प्रेस के द्वारा हुआ था। यह इन दो संतों के दिव्य संसर्ग , आध्यात्मिक आलोक , प्रभु की अद्भुत योजना एवं .....की सूझबूझ का परिणाम है कि गीता प्रेस प्रति वर्ष दो करोड़ पुस्तकें बेचती है। बिना चंदे के, बिना विज्ञापन के, यह प्रेस इतनी सस्ती पुस्तकें कैसे बेच सकती है? यह सभी के लिए आश्चर्य का विषय है। गीता प्रेस वास्तव में विश्व की सबसे बड़ी प्रेस कहलाने की अधिकारी है।

परन्तु भाई जी सम्पादक एवं लेखक के अतिरिक्त एक उच्चतम कोटि के भक्त, ज्ञानरूढ़ साधक एवं वीतरागी कर्मयोगी भी थे, यह सत्य कम लोग ही जानते हैं। भाई जी की दिव्य जीवन यात्रा बाल्यकाल से ही आरम्भ हो गई थी। बालक मन्नू अपनी दादी के साथ मंदिर जाता तो पेड़ के नीचे बैठकर सहज ध्यानमग्न हो जाता था। मुफ्त बेरों के लालच में मन्नू ने पूरी गीता कंठस्थ कर ली थी। दादी रामकौर जी ने अपने प्रिय पोते को अटूट नाम जाप का अभ्यास करवा दिया था।

अन्य मारवाड़ी व्यापारियों की तरह युवक हनुमान ने धंधे के लिए कलकत्ते की ओर प्रस्थान किया। परन्तु युवक हनुमान का मन एवं ध्यान आध्यात्मिक सत्संग एवं क्रांतिकारी गतिविधियों में अधिक लगता था , धंधे में न्यूनतम। इसीलिए भाई जी कभी सफल व्यपारी नहीं बन सके। भाई जी जब रोड़ा काण्ड के तहत अलीपुर जेल में बंदी थे तो रात्रि में अवसाद मिटाने के लिए उन्होंने नाम जाप का सहारा लिया। अपने शिमलाकाल की एकांत नजरबंदी की सजा के दो वर्षों में भाई जी ने ''श्री नारायण'' के चित्र पर दिन–रात ध्यान का अभ्यास इतना प्रगाढ़ एवं स्थाई बना लिया था कि बंद नेत्रों से खुले नेत्रों से , चर या अचर जीवों में भाई जी को ''नारायण'' की छवि के दर्शन होते थे। भाई जी शिमलाकाल को अपनी साधना स्थली कहते थे। ऐसा दिव्य एकांत उन्हें पुनः नसीब नहीं हुआ।

भाई जी प्रायः कहा करते थे ''यह अति सामान्य एवं साधारण जीवन ईश्वर की कृपा का प्रसाद है। इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। मुझे प्रतिपल यही लगता है कि मेरे जीवन को प्रभु ही चला रहे हैं।''

बंगाल से निर्वासन के बाद भाई जी अपनी दादी , माता , दो बहिनों एवं पत्नी का उत्तरदायित्व निभाते हुए कोई सुरक्षित व्यवसाय को खोज रहे थे। इसी सिलसिले में मारवाड़ी समाज के सिरमौर एवं गांधी जी के परम अनुयायी जमनालाल बजाज ने भाई जी को धंधे के लिए बम्बई बुलवा लिया। यहां भी भाई जी की अनेक सफल –असफल एवं आधे –अधूरे धंधों में भागीदारी रही।जहां भाई जी के समवयस्क मित्र राम कृष्णडालमिया एवं घनश्याम दास बिड़ला व्यवसाय की ऊँचाइयों को छू रहे थे , वहीं हनुमान प्रसाद पोद्दार का परिवार दो समय की रोटी ही जुटा पा रहा था।

लम्बे समय तक कांग्रेस में सक्रिय रहने के पश्चात् भी भाई

''एक दिन निर्गुण ब्रह्म का ध्यान करते–करते, सहसा नारायण का सगुण स्वरूप प्रकट होने लगा। मैं प्रभु की सगुण छवि को हटाकर निर्गुण स्वरूप पर ध्यान जमाने का बरबस प्रयास करता, परन्तु नारायण की छवि सामने से हटी ही नहीं। तभी एक तीव्र अनुभूति हुई कि दोनों तत्व एक ही हैं। सत्य एक ही है। निर्गुण रूप भी मेरा है एवं सगुण स्वरूप भी मेरा है।''

जी कांग्रेसी नेताओं के विचारों से मन नहीं मिला पाए। बम्बई प्रवास में भाई जी को अनेक दिव्य अनुभव हुए थे, जिन्हें हम प्रभु की अनुभूति या आंशिक साक्षात्कार कह सकते हैं। भाई जी ने अपने गुरुवत मौसेरे भाई जयदयाल गोयन्दका जी द्वारा प्रेरित होकर प्रभु के निर्गुण–निराकार स्वरूप की दृढ़ साधना की। इस साधना में अपनेपन का भेद सर्वथा मिट जाता है , जो व्यष्टि में होता है वही समष्टि में सिमट जाता है एवं मन उसी चेतनावस्था में स्थिर हो जाता है। भाई जी इस साधना में काफी आगे बढ़ गए थे, तभी एक चमत्कारिक अनुभव हुआ , उन्हीं के शब्दों में–

''एक दिन निर्गुण ब्रह्म का ध्यान करते–करते, सहसा नारायण का सगुण स्वरूप प्रकट होने लगा। मैं प्रभु की सगुण

नाम–जाप का वृहत्तर कार्यक्रम भाई जी द्वारा आरम्भ हुआ, जहां भक्तों ने करोड़ों की संख्या में नाम–जाप का संकल्प लिया एवं मारवाड़ियों की बही में रोकड़े के हिसाब की जगह नाम–जाप का हिसाब लिखा जाने लगा। कर्म क्षेत्र में नोआखली जैसी अनेक सामाजिक आपदाओं में भाई जी ने सेवा कार्य किये, गौ–रक्षा आंदोलन, कृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति एवं भगवद् भवन के निर्माण में भाई जी सबसे आगे थे। भाईजी ने विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना में भी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

छवि को हटाकर निर्गुण स्वरूप पर ध्यान जमाने का बरबस प्रयास करता, परन्तु नारायण की छवि सामने से हटी ही नहीं। तभी एक तीव्र अनुभूति हुई कि दोनों तत्व एक ही हैं। सत्य एक ही है। निर्गुण रूप भी मेरा है एवं सगुण स्वरूप भी मेरा है।''

भाई जी की यह अनुभूति निर्गुण एवं सगुण पर वाद–विवाद करने वालों का मुँह बंद करने वालों के लिए पर्याप्त है।

16 दिसंबर वर्ष 1927 को बिहार के जसडीह नगर में कभी ना सुनी , ना देखी एवं ना कही प्रभु की असीम कृपा बरसी थी। भाई जी ने जाग्रत अवस्था में खुले नेत्रों से मित्र–समाज के बीच साक्षात् नारायण की छवि के दर्शन किये थे , उसी साक्षात्कार में अनेक ऋषि–मुनियों ने संदेह दर्शन दिए थे। जिनमें नारद मुनि एवं अंगिरा ऋषि प्रमुख थे। कलियुग में साक्षात् अवतरण का यह दृष्टांत अद्भुत था।

भाई जी अपने सत्य स्वरूप को यथा संभव सबके सामने छिपा कर रखते थे। परन्तु भाई जी के अन्यतम सहयोगी श्री गंभीर चंद दुजारी उनके एक–एक शब्द एवं एक–एक लेख को बहुमूल्य खजाने की तरह सहेज कर रखते जाते थे, यह दुजारी जी के परिश्रम का ही फल था कि भाईजी द्वारा रचित सत्रह हजार पृष्ठों का अमूल्य साहित्य हमारे सामने है। दूसरी ओर भाई जी की चिन्मय देहगति एवं उनके भीतर अबाध चल रही नित्य लीला का प्राकट्य पूज्य राधा बाबा ने किया था। राधा बाबा ने रतनगढ़ प्रवास के दौरान एक रात्रि में दुजारी जी एवं चिम्मन लाल जी गोस्वामी के सामने यह रहस्योद्घाटन किया था। बाबा के शब्दों में–

''आप विश्वास करें कि पोद्दार प्रभु का यह पंचभौतिक ढांचा पूरी तरह राधा रानी के अधिकार में है। ऊपर से वो संसार के कार्य कर रहे हैं, परन्तु उनके भीतर नित्य लगातार प्रभु की लीला चल रही होती है। उनका सूक्ष्म शरीर युगल सरकार (श्री कृष्णा एवं श्री राधा रानी) को पूर्णतया समर्पित है। अतः प्रभु जब चाहें , तुम्हारे भाई जी की बाह्य वृत्तियों को लुप्त करके उन्हें अपने साथ लीला में प्रवेश कर लेते हैं। हाथ में कलम थामे या हाथ धोते हुए भाई जी स्पंदनहीन हो जाते हैं, उनकी देह निश्चल हो जाती है एवं आँखें पथरा जाती हैं। यह आपने बहुधा देखा है, भाई जी इस अवस्था को ''माथा खराब'' होना कहते हैं। इसका अर्थ यह है की भाई जी का बाह्य जगत से सम्बन्ध टूट गया है एवं अपने प्रभु से संयोग हो गया है।''

''श्री चैतन्य प्रभु के समकक्ष ही भाई जी की आतंरिक अवस्था है, ऐसे उदाहरण संसार में बिरले हैं।''

बंबई से धंधा समेटने के पश्चात् भाई जी का मन तो संन्यास लेकर गंगा जी के तट पर अनवरत प्रभु–भजन एवं भक्ति करने का था। परन्तु प्रभु का मन तो भाई जी को समाज–संसार के बीच रखकर उनके माध्यम से लोक कल्याण के अनेक कार्य सिद्ध करवाने का था। इस प्रकार भाई जी की ट्रेन बम्बई से चलकर सीधे गोरखपुर पहुँची। फलस्वरूप भाई जी ने 45 वर्षों तक कल्याण का सम्पादन किया। गीता प्रेस एवं कल्याण के माध्यम से भाई जी ने हिन्दू समाज को बीसवीं सदी की अप्रतिम भेंट दी है।

नाम–जाप का वृहत्तर कार्यक्रम भाई जी द्वारा आरम्भ हुआ, जहां भक्तों ने करोड़ों की संख्या में नाम–जाप का संकल्प लिया एवं मारवाड़ियों की बही में रोकड़े के हिसाब की जगह नाम–जाप का हिसाब लिखा जाने लगा। कर्म क्षेत्र में नोआखली जैसी अनेक सामाजिक आपदाओं में भाई जी ने सेवा कार्य किये, गौ–रक्षा आंदोलन, कृष्ण जन्मभूमि की मुक्ति एवं भगवद् भवन के निर्माण में भाई जी सबसे आगे थे। भाईजी ने विश्व हिन्दू परिषद् की स्थापना में भी महत्त्व पूर्ण भूमिका निभाई। हरे राम–हरे कृष्णा के संस्थापक श्री प्रभुपाद जी भी अमेरिका जाने से पहले भाई जी का सहयोग लेकर गए थे।

इसके बावजूद भाई जी ने कभी शिष्य नहीं बनाये या कोई आश्रम स्थापित नहीं किया। भाई जी ने अंग्रेजों के राज में ''रायबहदुर'' की उपाधि एवं भारत सरकार द्वारा ''भारत रत्न'' की उपाधि को विनम्रतापूर्वक अस्वीकार कर दिया। भाई जी ने कभी धन अर्जित नहीं किया। परन्तु उनके द्वारा लाखों की धन राशि लोक सेवा के लिए व्यय हुई।

१७ सितम्बर वर्ष १८९२ में जन्मे शेखावाटी के रतनगढ़ नगर के निवासी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार जी की इस वर्ष 125 वीं जयंती वर्ष है। इस पुण्य अवसर पर हम भाई जी के जीवन से दो प्रमुख सीख एवं आदर्श ग्रहण कर सकते हैं।

प्रथम – भाई जी की आध्यात्मिक यात्रा एवं चरमोत्कर्ष अवस्था, कोई दैविक चमत्कार नहीं हैं, वरन–पुरुषार्थ का परिणाम है। जिसे कोई भी साधक अपनी मेहनत से प्राप्त कर सकता है।

द्वितीय – भाई जी जीवन भर परिवार एवं समाज के बीच घिरे रहे, समाज की विसंगतियों से जूझते रहे। परन्तु भाई जी कमल की भांति संसार के पंक से अछूते रहे। जीवन के उतरदायित्वों को निभाते हुए अपने प्रभु से एकनिष्ठ जुड़े रहे।

प्रभु से यही प्रार्थना है कि इस अखंड दिव्य ज्योति की एक किरण हमें भी मिल सके।

renurajvanshigupta @ gmail.com

गत ३८ वर्षों से अमेरिका में वास। अपना व्यवसाय एवं पति व दो बेटों के साथ सुखी जीवन विश्व हिन्दू परिषद् व एकल अमेरिका में सक्रिय। गत पांच वर्षों से भाई जी श्री हनुमान प्रसाद पोद्दार विस्तृत शोध कार्य एवं उनके जीवन के आधार पर ''संसारी–संन्यासी'' उपन्यास प्रभात प्रकाशन द्वारा प्रकाशित। उनके कहानी, कविता एवं उपन्यास पूर्व में प्रकाशित।

कैथल (हरियाणा), 7 अगस्त। रक्षाबंधन के पावन अवसर पर विश्व हिंदू परिषद–बजरंग दल के सदस्यों ने सेवा बस्तियों में जाकर रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया।

विहिप जिला अध्यक्ष प्रो. प्रेम चंद मित्तल ने बताया कि विहिप कार्यकर्ता एकत्रित होकर सेवा बस्तियों में गए और वहां बहनों के साथ धूमधाम से रक्षाबंधन का त्यौहार मनाया। विश्व हिंदू परिषद की दुर्गा वाहिनी इकाई ने सीमा पर जवानों को राखी बांधकर रक्षाबंधन का त्यौहार बड़ी धूमधाम से मनाया । यह सब राखियां शहर की विभिन्न सामाजिक संस्थाओं ओर बहनों ने अपने हाथों से बना कर जवानों के लिए भेजी थी जिन्हें जवानों तक पहुंचा दिया गया है। जम्मू कश्मीर पुलिस, सीआरपीएफ व सेना के 300 जवानों को राखियाँ बांधी गई। दुर्गा वाहिनी की दिव्या, सोनिया, मातृशक्ति की शीला मित्तल, सीमा, रोशनी व विश्व हिंदू परिषद के जिला मंत्री चंद्रभान ओर बजरंग दल के जिला संयोजक अभिषेक, सह संयोजक अशोक, शुभम, राहुल भारत व विशाल भी मौजूद रहे।

abhig0299@gmail.com

पानीपत (हरियाणा)। दिनांक 2–8–17 को मातृ शक्ति, दुर्गा वाहिनी पानीपत की ओर से मानसिक व शारीरिक रुप से विक्षिप्त (दिव्यांग व मंद बुद्धि) बच्चों को (सवेरा स्कूल सनौली रोड) परिषद की बहनों द्वारा राखी बांधी गई व स्कूल के इन 60 बच्चों के लिए संगठन व संगठन के कार्यकर्ताओं द्वारा स्कूल की शिक्षिकाओं को 5100 रुपये की नकद धन राशि भी दी गई ।

विहिप के जिला मंत्री गुलशन सेठी ने बताया कि जिला जेल के बंदियों को भी राखियां बांधी गईं। वृहस्पतिवार को अनाथ बच्चों की कलाई पर तथा 5 अगस्त को हुसैनी वाला बार्डर पर फौजी भाइयों की कलाई पर बहनें राखी बांधने पहुंचेंगी।

gulshansethi97569@gmail.com

अशोकनगर, 09 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद, बजरंग दल ने भुजरिया रक्षाबंधन उत्सव् शासकीय अस्पताल में मरीजों के साथ मनाया। इस अवसर पर प्रान्त धर्म प्रसार प्रमुख दीपक मिश्रा ने कहा कि समाज सुखी, संगठित हो, राष्ट्र रक्षा का भाव प्रबल रहे।

जिला अध्यक्ष दिनेश जैन, जिलामंत्री अशोक रघुवंशी भी साथ में रहे।

deepakmishravhp@gmail.com

भगवा वाहन यात्रा

अशोकनगर, 15 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद बजरंग दल ने अखण्ड भारत सकल्प दिवस मनाया। आंबेडकर भवन में मुख्य अतिथि क्षेत्र मंत्री राजेश तिवारी ने कहा की हमारा भारत स्वतंत्र हुआ 15 अगस्त को परन्तु भारत भूमि इस पावन अवसर पर १४ अगस्त 1947 के पूर्व की भारतमाता के मानचित्र और उसको छांटनेवाले विश्वासघाती और अपराधियों का स्मरण करना भी प्रासंगिक रहेगा।

deepakmishravhp@gmail.com

अखंड भारत संकल्प दिवस

विश्व हिन्दू परिषद के स्थापना दिवस पर हिंदुत्व की रक्षा करने, भारत माता को देवी मानकर उसकी पूजा करने, खंडित भारत के हिस्सों को जोड़ने के लिए संगठित रहने का आह्वान किया गया। विहिप ने विशाल जिला सम्मेलन के बाद नगर में भगवा ध्वज के साथ विशाल शोभायात्रा भी निकाली।

विहिप के स्थापना दिवस पर आचार्य आरएस केला इंटर कॉलेज में जिलास्तरीय विशाल सम्मेलन आयोजित किया गया। जिलाध्यक्ष ऋषिपाल सिंह, न्यायमूर्ति (रि.) रामअवतार सिंह की उपस्थिति में ओम जाप, विजय मंत्र के साथ शुरु हुए सम्मेलन के मुख्य वक्ता विहिप के राष्ट्रीय प्रवक्ता एवं क्षेत्रीय मंत्री देवेश उपाध्याया ने राष्ट्र की एकता, अस्मिता और अखंडता के प्रति हिन्दू समाज के उदासीन होने पर चिंता व्यक्त की।

उन्होंने कहा कि देश की संस्कृति और हिंदुत्व की रक्षा के लिए 1964 में विहिप की स्थापना की गई थी। विभाजन को दुर्भाग्यपूर्ण बताते हुए श्री उपाध्याय ने कहा कि हमें कश्मीर से कन्याकुमारी तक अखंड भारत का स्वप्न साकार करने के लिए भारत माता के कटे हुए पाकिस्तान जैसे हाथ शरीर से जोड़ने होंगे। तभी हम अपनी माटी का कर्ज चुका पाएंगे।

मवाना, 14 अगस्त। विहिप और बजरंग दल का अखंड भारत संकल्प कार्यक्रम नगर स्थित आशीर्वाद मंडप में आयोजित हुआ। वक्ताओं ने हिंदू समाज एवं युवाओं से जागृत होने का आह्वान किया।

अध्यक्ष मुकुल रस्तोगी व विशिष्ट अतिथि अखिल कौशिक ने भारत माता व भगवान श्रीराम के चित्र के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित किया। संचालन बजरंग दल के विभाग संयोजक आशू त्यागी ने किया।

सरधना, 14 अगस्त। रघुवीर सदन में बजरंग दल के तत्वावधान में अखंड भारत संकल्प दिवस मनाया गया। बजरंग दल क्षेत्रीय संयोजक रणदीप पोखरियाल ने देश में हिंदुओं की घटती संख्या और सीमा पर लगातार हो रहे हमलों पर रोष प्रकट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता केके पब्लिक स्कूल के प्रबंधक सुशील कुमार, संचालन अजब सिंह शास्त्री ने किया। विभाग संयोजक मिलन सोम ने आभार व्यक्त किया।

15 अगस्त को विश्व हिन्दू परिषद् मेरठ महानगर द्वारा ब्रहमपुरी प्रखंड में श्रीकृष्ण जन्मोत्सव व विश्व हिन्दू परिषद् स्थापना दिवस मनाया गया।

gopalkrishanatrey@gmail.com

वृक्षारोपण

मेरठ (उ.प्र.), 3 अगस्त को विहिप, बजरंग दल मेरठ महानगर द्वारा माधवपुरम प्रखण्ड तथा 8 अगस्त को विहिप, बजरंग दल मेरठ महानगर द्वारा गंगोल तीर्थ प्रखण्ड में वृक्षारोपण किया गया। विहिप मेरठ महानगर द्वारा 2000 पेड़ लगाए जायेंगे।

gopalkrishanatrey@gmail.com

15 अगस्त। विहिप के 52वें स्थापना दिवस एवं जन्माष्टमी तथा अखण्ड भारत दिवस के उपलक्ष्य में अण्डमान निकोबार में कार्यक्रम आयोजित किया गया।

vhpandaman@gmail.com

एकल अन्तरराष्ट्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन

जनकल्याण प्रतिष्ठान नेपाल द्वारा संचालित एकल विद्यालय अभियान का अन्तरराष्ट्रीय कार्यकर्ता सम्मेलन नारायणघाट स्थित नारायणी रिसोर्ट में ११ अगस्त से १४ अगस्त तक आयोजित किया गया।

सम्मेलन में एकल अभियान अन्तरराष्ट्रीय समन्वयकर्ता रमेश जैन सहित लन्दन से अनिल पुरी, इटली से विठ्ठल महेश्वरी, विभिन्न देशों के सहयोगकर्ताओं के साथ साथ एकल अभियान के अन्तरराष्ट्रीय प्रभारी श्याम जी गुप्त, एकल अभियान भारत के अध्यक्ष बजरंगलाल बागडा, एकल विद्यालय फाउण्डेशन ऑफ इन्डिया के महासचिव रवि देव के साथ ही नेपाल के बड़े उद्योगपति डा. विनोद चौधरी की भी उपस्थिति रही ।

सम्मेलन में विदेशी कार्यकर्ताओं के साथ–साथ ही नेपाल के संच, जिला,

अंचल व राष्ट्रीय स्तर के पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं की उपस्थिति रही थी।

सम्मेलन विशेषतः नेपाल में एकल विद्यालय विस्तार पर केन्द्रित रहा। हाल ही में नेपाल में चल रहे 2100 विद्यालय की संख्या को बढाकर आनेवाले तीन वर्षों में 5000 पहुंचाने के लक्ष्य को मद्देनजर रखते हुए व्यापक विचार–विमर्श किया गया।

raja.news360@gmail.com

अखण्ड भारत संकल्प दिवस

जम्मू 14 अगस्त। अखंड भारत संकल्प दिवस के उपलक्ष्य में बजरंगदल की प्रान्त टोली द्वारा श्री रणवीरेश्वर मंदिर शालामार से मोटरसाईकिल–स्कूटर रैली का आयोजन किया गया। बजरंगियों ने पुराने शहर में रैली निकालकर समाज को अखण्ड भारत के प्रति जागृत किया।

पूज्य सन्त दिनेश भारती, विहिप प्रान्त अध्यक्ष लीलाकरण शर्मा, कार्यकारी अध्यक्ष सुरेश चन्द्र भी उपस्थित रहे।

rajeshvhp.media@gmail.com

दिल्ली, 13 अगस्त। विश्व हिन्दू परिषद के तत्वावधान में दिल्ली में अनेक स्थानों पर अखंड भारत संकल्प दिवस मनाया गया जिसमें हजारों कार्यकर्ताओं ने भाग लिया।

विश्व हिन्दू परिषद– क्षेत्रीय संगठन मंत्री करुणा प्रकाश ने कहा कि पिछले एक हजार वर्षों में हमारे देश को 27 बार विभाजन का दंश झेलना पड़ा है। इसका परिणाम भारत का भूभाग एक करोड़ लाख वर्ग किलोमीटर से घटकर आज करीब साढे 32 लाख वर्ग किलोमीटर रह गया है। किसी भी देश में कहीं भी खुदाई होती है तो वहां मन्दिर और मूर्तियों के अवशेष मिलते हैं। यह इस बात का प्रमाण है कि वहां हिन्दू धर्म था तथा वो कभी भारत का हिस्सा था।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे विश्व हिन्दू परिषद दिल्ली के मंत्री बचन सिंह ने हिन्दू धर्म तथा देश की रक्षा के लिए आगे बढ़कर हमेशा तैयार रहने की बात कही।

vhpmediadelhi94@gmail.com

अखण्ड भारत संकल्प दिवस संभाजीनगर (औरंगाबाद महा0), 13 अगस्त

पृष्ठ 10 का शेषांश.....

है। अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन आदि भाषायें अपने देश के बाहर भी व्यवहार में हैं, इससे उन भाषाओं का महत्व प्रकट होता है। हिंदी बोलने और समझने वालों की विश्व में जितनी बड़ी संख्या है और जितने व्यापक रूप में इसका व्यवहार होता है उसके आधार पर हिंदी को सचमुच में विश्व भाषा कहा जाता है।

विश्व में हिंदी का क्या स्थान है, भविष्य में क्या संभावनाएं हैं, हिन्दी के शिक्षण से संबंधित क्या समस्यायें हैं, उनका निराकरण किस प्रकार हो सकता है, हमारे युवाओं को इस कार्य में क्या भूमिका हो सकती है, इन पर गंभीर चिंतन समय की आवश्यकता है। हिंदी की प्रतिष्ठा बढ़ेगी तो अन्तरराष्ट्रीय क्षेत्र में भारत को भी प्रतिष्ठा बढेगी और विश्व बंधुत्व की कल्पना को साकार कर पाने की ओर ठोस कदम होगा। स्वतंत्र भारत के नागरिक के रूप में हमें विश्व में पुनः ऊंचा सिर करके चलने का अवसर प्राप्त हुआ है।

अब समय आ गया है कि हमारे युवक सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक कार्य के लिए और विचार, अभिव्यक्ति, विश्वास, कर्म और उपासना को स्वतंत्र प्रतिष्ठा और समान अवसर प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ें। आज आवश्यकता है भारतीय युवाओं में व्यक्ति की गरिमा तथा राष्ट्र की एकता एवं अखण्डता सुनिश्चित करने वाली बंधुजन भाव बढ़ाने के लिए हिंदी के माध्यम से राष्ट्र का नवनिर्माण करने की पहल करें।

समूह–चर्चा

नई दिल्ली, 13 अगस्त। विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मुख्यालय में भारत संस्कृत परिषद द्वारा एक दिवसीय निर्विकल्प संस्कृत स्वाध्याय वर्ग आयोजित किया गया। अध्यक्षता विश्व हिंदू परिषद के केंद्रीय मंत्री एवं भारत संस्कृत परिषद् के महामंत्री आचार्य राधाकृष्ण मनोडी ने की। विहिप–आचार संहिता लेखन टोली के केंद्रीय संयोजक धर्म नारायण शर्मा ने कहा कि भारतीय संस्कृति तथा सभ्यता के विकास में देववाणी की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

महर्षि सांदीपनि राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान के सचिव एवं लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्त विश्वविद्यालय के देवी प्रसाद त्रिपाठी ने संस्कृत छात्रों की घटती संख्या के प्रति चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि हम सब आचार्यों को एकजुट एकमत होकर अनुकूल वातावरण बनाना पड़ेगा। शीतला माता मंदिर, गुरुकुल गुरुग्राम के प्राचार्य आचार्य राघवेंद्र भट्ट ने कहा कि समाज को संस्कारित करने वाले धार्मिक आयोजनों तथा धर्माचार्यों के प्रशिक्षण पर ध्यान देना चाहिए। हरियाणा संस्कृत अकादमी के उपाध्यक्ष डॉ. श्रेयांश द्विवेदी ने शासन से मांग की है कि समय रहते सभी मंत्रालयों तथा विश्वविद्यालयों में संस्कृत विभाग स्थापित किए जाने चाहिए।

– मुनीश कुमार
muneshkumarverma@gmail.com

संगोष्ठी

रांची (झारखण्ड) । अ0भा0 सामाजिक समरसता विभाग, रांची महानगर की ओर से 'सामाजिक समरसताः आज की सर्वोपरि आवश्यकता पर मारवाडी आरोग्य भवन वनवासी कल्याण केंद्र में संगोष्ठी आयोजित की गई, जिसकी अध्यक्षता प्रदेश अध्यक्ष नरेंद्र कुमार सिंह ने की।

अ0भा0 सामाजिक समरसता विभाग (विहिप) के अ0भा0 मंत्री देवजीभाई रावत ने कहा कि हिंदू समाज में फैली कुरीतियों को एकजुट होकर दूर करना होगा तभी समाज में समरसता आएगी। हमें समाज के बीच जाना होगा। भेदभाव और अन्य कुरीतियों को दूर करना होगा। इसके लिए मन से प्रयास करना होगा। हर हिंदू के अंदर गर्व की भावना जाग्रत करनी होगी। यह तभी होगा जब हम सामाजिक बुराइयों को दूर करेंगे। समाज को एकजुट और समरस बनाने के लिए यह अनिवार्य हैं।

हमारे हिंदू धर्म में कई मत–पंथ– सम्प्रदाय हैं और सभी हिंदू किसी न किसी जाति– व्यवसाय एवं कार्यों से जुड़े हैं और हिंदू समाज को समरसता का भाव लाकर, सहयोग और समन्यवय करने का कार्य भी करते हैं। ऐसे में हम विश्व हिंदू परिषद संगठन द्वारा समस्त समाज में सेवा, शिक्षा, संस्कार और संगठन को आगे बढ़ाना है। संगोष्ठी में झारखण्ड प्रांत के सामाजिक समरसता के प्रमुख रंजन कुमार सिन्हा, उपप्रमुख दीपक महतो, भवानी शंकर, रांची महानगर के अध्यक्ष शैलेश कुमार सिन्हा भी उपस्थित थे।

पृष्ठ 11 का शेषांश...

हाथी पोल

रामगढ़ के उत्तरी छोर के निचले भाग में एक विशाल सुरंग है, जो लगभग 39 मीटर लम्बा एवं मुहाने पर 17 मीटर ऊंचा एवं इतना ही चौड़ा है। इसे हाथपोल या हाथीपोल कहते है। अन्दर इसकी ऊंचाई इतनी है कि इसमें से हाथी आसानी से गुजर सकता है।

बरसात में इसमें से एक नाला बहता है। अंदर चट्टानों के बीच में एक कुण्ड है जो सीता कुण्ड के नाम से जाना जाता है जिसका पानी अत्यंत निर्मल एवं शीतल है।

तिरुपति मंदिर रोड़

तिरुपति तीर्थ स्थल आंध्रप्रदेश के चित्तूर जिले में है। यहां समुद्र तल से 3200 फीट ऊंचाई पर स्थित तिरुमला की पहाडियों पर बना श्री वेंकटेश्वर मंदिर दुनियाभर में प्रसिद्ध है। यहां तक पहुंचने के लिए पहाड़ियों की ओर चढ़ती हुई कई घुमावदार और खतरनाक सड़कों को पार करना होता है तब जाकर कहीं भगवान के दर्शन होते हैं, लेकिन यदि आप जरा भी ध्यान चूके तो सीधे भगवान के पास पहुंच जाएंगे। यहां दुर्घटनाओं का खतरा हर दम बना रहता है।

पाक विस्थापित शिविरों में स्वतंत्रता दिवस समारोह

नई दिल्ली, 15 अगस्त। भगिनि निवेदिता सेवा न्यास द्वारा पाकिस्तान से आये हिन्दू परिवारों की देख–रेख वर्ष २०११ से की जा रही है। न्यास ने समाजसेवियों व दानकर्ताओं के सहयोग से उनकी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करते आ रहा है।

15 अगस्त को भगिनि निवेदिता सेवा न्यास के द्वारा समस्त पाक हिन्दू कैम्पों में स्वतंत्रता दिवस धूमधाम से मनाया गया। समस्त कैंप वासियों के चेहरों पर एक अलग रौनक थी। उनके चेहरे की चमक उनकी स्वाधीनता व्यान कर रही थी। यू तो वो पाकिस्तान में स्वतंत्र देश के नागरिक थे लेकिन झेल गुलामी रहे थे। साथ ही कृष्ण जन्माष्टमी भी बड़े हर्षोल्लास से मनाया सभी ने। न्यास के महामंत्री महावीर प्रसाद गुप्ता तथा कोषाध्यक्ष ब्रह्मदत्त भारद्वाज ने लोगों का मनोबल बढ़ाया। सांस्कृतिक प्रोग्राम में हुए समस्त 60 प्रतिभागियों को वस्त्र वितरित कर उनका मनोबल बढ़ाया गया।

bhagini007@gmail.com

डिमापुर, (नगाभूमि) 15 अगस्त। श्रीकृष्ण जन्माष्टमी और परिषद स्थापना दिवस एवं स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर आयोजित शोभायात्रा। jeyakp@gmail.com

माउंट आबू रोड

माउंट आबू राजस्थान का एकमात्र पहाड़ी नगर है। समुद्र तल से यह 1220 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। यहाँ पहाड़ अरावली पहाड़ियों की श्रंखला का सर्वोच्च शिखर है। यहां जैन और हिन्दू धर्म के प्रमुख तीर्थ स्थान है। माउंट आबू तक पहुंचने के लिए 28 किलोमीटर के दर्रे से जाना पड़ता है जो आबू रोड से शुरु होता हैं। यह सड़क कुछ जगहों पर बहुत खतरनाक हो जाती है। जहां एक बार में एक ही वाहन सड़क पर चल सकता हैं, ऐसे में बहुत सावधानी रखनी होती है। सावधानी हटी, दुर्घटना घटी। नीचे खाई में गिरने के मौके बहुत होते हैं।

समाप्य

मेरठ प्रांत में कांवड़ सेवा शिविर

पृष्ठ 06 का शेषांश.....

भी यही सबसे बेहतर है कि वह अपनी पढ़ाई पूरी करे। अखिला के वकील को भी इससे कोई आपत्ति नहीं थी।

लिहाजा 19 दिसंबर 2016 को न्यायालय ने निर्देश दिए कि दो दिन बाद अखिला न्यायालय आए ताकि उसे सर्जरी के कोर्स में दाखिले के लिए उसके कॉलेज भेजा जा सके। साथ ही न्यायालय ने अशोकन को भी निर्देश दिए कि वे अखिला के सभी जरूरी प्रमाणपत्र लेकर दो दिन बाद न्यायालय आएं। अब इस मामले में 21 दिसंबर को सुनवाई होनी थी और अखिला को उसके कॉलेज भेजा जाना था। लेकिन उस दिन जो हुआ उससे इस पूरे मामले का रुख ही बदल गया।

21 दिसंबर की सुबह अखिला एक अनजान व्यक्ति के साथ न्यायालय पहुंची। न्यायालय के पूछने पर अखिला के वकील ने बताया कि यह व्यक्ति अखिला का पति है और दो दिन पहले ही सैनाबा के घर पर इन लोगों की शादी मुस्लिम रीति–रिवाजों के अनुसार हो चुकी है। इस बात पर न्यायालय ने बेहद हैरानी जताते हुए सवाल अखिला के वकील से सवाल किये कि दो दिन पहले ही इस मामले की सुनवाई हुई थी और उस दिन यह तय हुआ था अखिला को उसके कॉलेज भेजा जाएगा। ऐसे में यदि उसी दिन उसकी शादी हो रही थी या होने वाली थी तो यह बात न्यायालय को बताई क्यों नहीं गई?

अखिला की अचानक हुई शादी की जानकारी मिलने के बाद न्यायालय ने इस मामले की विस्तार से जांच के आदेश दिए। इस दौरान सरकारी वकील द्वारा न्यायालय को यह भी बताया गया कि सैनाबा–जिसके घर पर अखिला की शादी हुई थी–पहले भी इस तरह के मामलों में शामिल रही है। सरकारी वकील का कहना था कि कुछ समय पहले ही एक अन्य हिन्दू लड़की का भी ठीक इसी तरह धर्मांतरण हुआ था और उस लड़की ने अपने बयान में बताया था कि सैनाबा ने ही उसे मुस्लिम लड़के से शादी करने की सलाह दी थी ताकि उसके धर्मांतरण पर कोई सवाल न उठा सके।

न्यायालय ने माना अखिला का मामला सिर्फ एक लड़की के अपनी इच्छा से धर्मांतरण और शादी का मामला नहीं लगता बल्कि इसके पीछे किसी संगठन के होने की संभावनाएं लगती हैं। बेहद संदेहास्पद तरीके से हुई अखिला की इस शादी पर न्यायालय ने गहरा असंतोष जताया और इस मामले से जुड़े तमाम लोगों की जांच के आदेश स्थानीय पुलिस को दिए। साथ ही न्यायालय ने मामले की सुनवाई पूरी होने तक अखिला को हॉस्टल भेजने के भी आदेश दे दिए। इसके बाद हुई जांच में न्यायालय ने पाया कि शफीन जहां नाम के जिस व्यक्ति से अखिला की शादी हुई है, उस पर कुछ आपराधिक मामले भी दर्ज हैं। साथ ही न्यायालय को यह भी बताया गया शफीन पहले खाड़ी देशों में काम कर चुका है और आने वाले समय में उसके दोबारा वहां जाने की संभावनाएं हैं। ऐसे में न्यायालय ने माना कि यह मामला बहुत हद तक उसी दिशा में जाता दिख रहा है जिसकी संभावना अखिला के पिता ने जताई थी। न्यायालय ने माना कि उनका डर निराधार नहीं है कि उनकी बेटी को सीरिया भी भेजा जा सकता है।

अगली सुनवाइयों में न्यायालय ने पाया कि इस मामले में शामिल कई लोग ऐसे हैं जिन पर पहले भी जबरन धर्मांतरण के आरोप लग चुके हैं। साथ ही जिस शफीन जहां से अखिला की शादी हुई थी, वह व्यक्ति पहले कभी अखिला से नहीं मिला था। ऐसे में न्यायालय ने सवाल उठाए कि यह शादी कैसे और किसके कहने पर अचानक कर दी गई। अखिला के घरवालों को भी इस शादी की कोई जानकारी नहीं थी। न्यायालय ने यह भी कहा कि 'यदि कोई हिंदू लड़की किसी मुस्लिम लड़के से प्रेम–विवाह करती है तो उसमें कुछ भी गलत नहीं है। ऐसे कई मामले हमारे संज्ञान में अक्सर आते हैं और अंतर–धार्मिक विवाहों को हम कभी गलत नहीं मानते। लेकिन यह मामला प्रेम–विवाह का नहीं है। इस मामले में तो अखिला उस लड़के को जानती तक नहीं जिससे उसकी शादी हुई है।'

इन तमाम बातों के अलावा न्यायालय ने यह भी गौर किया कि पूरी सुनवाई के दौरान अखिला कई बार अपनी ही बातों से पलट रही थी या गलत तथ्य न्यायालय में रख रही थी। मसलन, सर्जरी के कोर्स में दाखिले को लेकर अखिला ने पहले न्यायालय को बताया था कि उसने दाखिला ले लिया है, लेकिन बाद में न्यायालय ने पाया कि उसने कभी उस कोर्स में दाखिला नहीं लिया था। इसके अलावा अपने नाम को लेकर भी अखिला स्पष्ट नहीं थी और उसने चार बार अपना अलग–अलग नाम बताया था। किसी शपथपत्र में उसने अपना नाम हदिया बताया था तो किसी दस्तावेज में आशिया और कहीं अखिला तो कहीं अधिया। इस वजह से न्यायालय ने माना कि इस बात की प्रबल संभावनाएं हैं कि अखिला दूसरों के इशारे पर काम कर रही है।

अखिला द्वारा स्वेच्छा से इस्लाम अपनाने की बात पर भी न्यायालय ने संदेह जताया। अखिला के शपथपत्र के अनुसार इस्लामिक किताबें पढ़ने और इंटरनेट पर वीडियो देखने से उसका

पृष्ठ 2 का शेषांश....

गए हैं या टूट गए हैं। ऐसे में सभी पीड़ितों को घर फिर से खड़ा करने के लिए रु. 1,00,000 दिए जाएं।

पढ़नेवाले बच्चों की किताबें आदि रही नहीं, शालाएं भी टूट गयी हैं। उन्हें किताब, नोटबुक्स, लिखने का सामान, कम्पास बाक्स आदि दिए जाएं और शालाओं को खड़ा करने के लिए विशेष अनुदान दिया जाए।

छोटी बड़ी दुकानें टूटकर सामान बह गया है ऐसे छोटे और मध्यम दुकानदारों/व्यापारियों को कागजों के फेर में न उलझाकर उपयुक्त रकम अनुदान में दी जाए। सरकार काम कर ही रही है, समाज भी आगे आए और बिखरी जिंदगियां फिर से खडी करने में सहयोग करें। kpvhp7@gmail.com

सहयोग के लिए संपर्क :

विश्व हिन्दू परिषद–अहमदाबाद।

रक्षितभाई – 08401698348, **ई मेल** – drtogadia@gmail.com

रुझान इस्लाम की तरफ हुआ और उसने धर्म बदलने का मन बनाया। लेकिन न्यायालय के पूछने पर ऐसी किसी भी किताब या वीडियो की विस्तृत जानकारी अखिला न्यायालय को नहीं दे पाई। साथ ही अपने इस्लाम धर्म स्वीकारने की बात को लेकर भी अखिला स्पष्ट नहीं थी। उसने न्यायालय को बताया कि 2016 में ही उसने इस्लाम अपनाया है, लेकिन न्यायालय ने पाया कि 2015 में भी उसने एक हलफनामा दिया था जिसमें उसने इस्लाम धर्म अपनाने की बात कही थी और अपना नाम आशिया बताया था।

इन तमाम बातों पर चर्चा करते हुए केरल उच्च न्यायालय ने 24 मई 2017 को अपना फैसला सुनाया और अखिला की शफीन जहां से हुई शादी को रद्द कर दिया। न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी जिक्र किया कि अखिला के धर्मांतरण से जुड़े अधिकतर लोगों में यह समानता है कि वे सभी 'सोशल डेमोक्रेटिक पार्टी ऑफ इंडिया' से जुड़े हुए हैं। इस पार्टी पर प्रतिबंधित संगठन सिमी से जुड़े होने के आरोप लगते रहे हैं। लिहाजा न्यायालय ने माना अखिला का मामला सिर्फ एक लड़की के अपनी इच्छा से धर्मांतरण और शादी का मामला नहीं लगता बल्कि इसके पीछे किसी संगठन के होने की संभावनाएं लगती हैं। न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी लिखा कि जिन लोगों को इस मामले की जांच सौंपी गई थी उन्होंने बेहद ऊपरी तौर से यह जांच की है और कई अहम् मुद्दों को अपनी जांच में छुआ तक नहीं है।

अखिला के मामले में किसी संगठन के होने की बात न्यायालय ने इसलिए भी कही क्योंकि अखिला की वकालत केरल उच्च न्यायालय के कुछ वरिष्ठ वकील कर रहे थे। साथ ही अखिला ने बीच में ही अपने वकील बदले भी थे। ऐसे में न्यायालय ने सवाल उठाए कि अलग–अलग वरिष्ठ वकीलों की मोटी फीस चुकाने के लिए अखिला की वित्तीय मदद कोई तो जरूर कर रहा है। आतंकवादी संगठनों द्वारा लड़कियों को विदेश भेजने के कुछ मामलों का जिक्र करते हुए न्यायालय ने अपने फैसले में यह भी लिखा कि, 'शफीन जहां की मां खाड़ी में ही रहती हैं। वह भी वहां रह चुका है और भविष्य में वहीं लौटना भी चाहता है। ऐसे में यदि उसके ऊपर छोड़ दिया जाता तो वह अखिला को विदेश ले जा सकता था और जिस तरह अखिला के दस्तावेजों में उसका अलग–अलग नाम दर्शाया जा रहा है, यदि वह देश से बाहर चली जाती तो उसे खोज पाना भी असंभव हो जाता। ऐसी कई मामले हो भी चुके हैं जिनमें इसी तरह धर्मांतरण के बाद लड़कियों को विदेश ले जाया गया और फिर वे कभी नहीं मिलीं।'

लगभग सौ पन्नों का फैसला देते हुए न्यायालय ने अंततः अखिला को उसके माता–पिता के साथ भेज दिया। न्यायालय ने कहा कि 'अखिला द्वारा कही गई स्वेच्छा से धर्मांतरण की बात तथ्यों से साबित नहीं होती। साथ ही अखिला अपनी पहचान को लेकर भी स्पष्ट नहीं है। ऐसे में उसे उसकी इच्छानुसार कहीं भी जाने देना उसके भविष्य के लिए खतरनाक हो सकता है। फिलहाल उसे सुरक्षा, देख–भाल और अपने अभिभावकों के मार्गदर्शन की जरूरत है।' न्यायालय ने यह भी कहा कि 'हम अपने 'परेंस पैट्रिआई' क्षेत्राधिकार (जब न्यायालय खुद एक अभिभावक की भूमिका निभाए) का प्रयोग कर रहे हैं. यह अदालत अपनी जिम्मेदारी तभी निभा सकती है जब हम सुनिश्चित करें कि अखिला सुरक्षित हाथों में हो।

यह मामला अब सर्वोच्च न्यायालय में है. शफीन जहां (जिससे अखिला की शादी हुई थी) ने केरल उच्च न्यायालय के फैसले के खिलाफ सर्वोच्च न्यायालय में अपील दाखिल की है. यहां कपिल सिब्बल और इंदिरा जयसिंह जैसे दिग्गज वकील उसकी पैरवी कर रहे हैं। इसके चलते यह सवाल भी उठ रहे हैं कि शफीन जहां इन दिग्गज वकीलों की भारी–भरकम फीस कैसे चुका रहे हैं। बहरहाल, सर्वोच्च न्यायालय ने भी अब तक इस मामले में लगभग वही नजरिया रखा है जो केरल उच्च न्यायालय का रहा है. सर्वोच्च न्यायालय ने अब इस मामले की जांच एनआईए को सौंप दी है और रिटायर्ड जस्टिस आरवी रविन्द्रन को इस जांच की निगरानी करने की जिम्मेदारी दी गई है.

एनआईए की जांच के बाद इस मामले में चाहे जो भी सामने आए, फिलहाल केरल उच्च न्यायालय के फैसले को पूरा पढ़ने पर इतना तो साफ है कि यह मामला जिस तरह से प्रचारित हो रहा है, उससे काफी अलग है। न तो यह उस तरह के 'लव जिहाद' का ही मामला है जैसा कि हिंदूवादी संगठनों द्वारा प्रचारित किया जाता है और न ही यह एक बालिग लड़की द्वारा स्वेच्छा से किये गए अंतर–धार्मिक प्रेम विवाह का ही सीधा–सरल मामला है। इसलिए कहा जा सकता है कि इस मामले में विस्तृत जांच के आदेश दिया जाना, इसकी कलई खुलने की दिशा में एक अहम् कदम है जो सर्वोच्च न्यायालय ने उठा लिया है।

(सत्याग्रह, 23 अगस्त)

अखिला के पिता अपनी इकलौती बेटी के अचानक हुए धर्मांतरण से तो परेशान थे ही, वे इसलिए भी चिंतित थे कि उनकी बेटी सैनाबा नाम की एक बिलकुल अनजान महिला पर उनसे ज्यादा विश्वास कर रही थी और उसी के साथ रहने लगी थी। अशोकन को अपनी बेटी की पढ़ाई की भी चिंता थी जिसके लिए उन्होंने बैंक से कर्ज भी लिया था।

पृष्ठ 26 का शेषांश.....

का वर्चस्व है। पाटिल ने आरोप लगाया है कि अगर मुसलमानों को आसानी से घर नहीं मिल पाता है तो वे हिंदुओं को धमकी देते हैं और उन्हें जबरन अपना घर बेचने पर मजबूर करते हैं।

पाटिल ने कहा कि जिस तरह से घर लेने के लिए मुस्लिम चालाकी दिखाते हैं और हिंदुओं को प्रताड़ित करते हैं। इसलिए ही मैं चाहती हूं कि हिंदू इलाकों में डिस्टर्बड एरिया एक्ट लगाया जाए ताकि हिंदुओं के खिलाफ कोई हिंसा न हो पाए। मैं कलेक्टर से निवेदन करती हूं कि वे इस एक्ट को लागू करें क्योंकि इन इलाकों के रहने वालों ने मुझे अपना प्रतिनिधि बनाया है, इसलिए उनकी परेशानी दूर करना मेरा कर्तव्य है।

(जनसत्ता, 23 अगस्त)

हरिकृष्ण निगम

पं. दीनदयाल उपाध्याय जन्मशती वर्ष पर विशेष

महामनस्वी पं. दीनदयाल उपाध्याय

आधुनिक काल के वर्तमान ऋषि और एकात्म मानवाद की अवधारणा के प्रणेता पं. दीनदयाल उपाध्याय जी का जन्म शताब्दी वर्ष देशभर में 2015–16 से ही मनाया जा रहा है। सरकार के मानव संसाधन विकास मंत्रालय के उच्च शिक्षण विभाग, केन्द्रीय हिंदी निदेशालय ने अनेक प्रकाशनों की रूपरेखा भी सामने रखी है। इसमें शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, अन्त्योदय, दलित विमर्श आदि अनेक विषयों से संबंधित उनके विचारों व चिंतन को रेखांकित किया जा रहा है।

पं. दीनदयाल जी उपाध्याय का सम्पूर्ण जीवन सरलता, सादगी निराभिमान से ओतप्रोत रहा था। वेश–भूषा, विचारों और अपने चिंतन में भारतीयता से वे इतने ओतप्रोत थे कि जब वे अपने कुछ निजी मित्रों व सहयोगियों के आग्रह पर अमेरिका गए थे तब वहां के तत्कालीन राष्ट्रपति एवं अनेक प्रभावशाली रिपब्लिकन व डेमोक्रेट दल के सीनेटर व अमेरिकन कांग्रेस के सर्वोच्च स्तर के अधिकारी भी उन्हें बरबस प्राग्मेटिक या यथास्थितवादी कह उठे थे। उन्होंने वर्तमान समस्याओं को एक सही परिप्रेक्ष्य में देख देश की समृद्ध संस्कृति और उसकी अपनी आत्मा के स्वरूप को पहचान कर ही प्रत्येक हल को ढूंढ़ने की चेष्टा की थी।

विपत्तियों के बीच बाल्यजीवन

उनका बाल्यजीवन संघर्षपूर्ण था जो अभावों के कांटों के बीच बीता था। निम्न मध्य वर्ग में वे पैदा हुए थे और जब वे मात्र 3 वर्ष के थे तभी उनके पिता दिवंगत हो गए थे और 7 वर्ष की आयु में उनकी माता का साया भी उनके ऊपर से उठ गया था। नाना के घर में उनकी प्राथमिक शिक्षा का प्रबंध हुआ था पर दस वर्ष की आयु में वे भी परलोकवासी हो गए। इन सब विपत्तियों में उनके 2 वर्ष छोटे भाई शिवदयाल जी उनके साथ थे। 18 वर्ष की आयु में काल ने एक बार फिर चोट देकर उनके छोटे भाई को भी

उनसे छीन लिया।

उन्होंने बचपन में ही आत्मीयता को विस्तार देना सीख लिया था और यही कारण था कि एक के बाद एक हर आनेवाली आपत्तियों को वे अनदेखा कर हर स्तर के व्यक्ति से घुलने–मिलने की कला में पारंगत हो गए थे। पद, प्रतिष्ठा और यश के पीछे उन्होंने कभी कोई दौड़ न लगाई। उनकी सादगी और कार्यकुशलता का यह परिणाम था कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रचारक के रूप में वे जल्दी ही समस्त उत्तरप्रदेश के प्रभारी बन गए थे।

यद्यपि यह भी सच है कि प्रांत की प्रशासनिक सेवा की प्रतियोगिता में वे प्रथम रहे थे पर उन्होंने त्यागपत्र देकर अपने को संघकार्य के लिए समर्पित कर दिया था। सन 1950 में जब उन्होंने देखा कि देश शाश्वत चिरन्तन राष्ट्रीय धारा से विचलित हो रहा था तो वे श्यामाप्रसाद मुखर्जी को भारतीय आदर्शों पर आधारित पृथक राजनीतिक संगठन बनाने में सहयोग देने को तैयार हो गए थे। उन्होंने लखनऊ में उत्तरप्रदेश का एक सम्मेलन बुलाया और 21 सितंबर 1951 को प्रादेशिक जनसंघ की स्थापना की तथा 21 अक्टूबर 1951 को दिल्ली के अखिल भारतीय अधिवेशन में डॉ0 श्यामाप्रसाद मुखर्जी ने उन्हें दल का अखिल भारतीय महामंत्री नियुक्त कर दिया।

पं. दीनदयाल जी 1967 तक अनन्य भाव से इस दायित्व का निर्वाह करते हुए एक सुदृढ़ राष्ट्र के संगठन से जुड़े रहे। अनेक बार दल के अध्यक्ष पद संभालने के लिए उन्हें कहा गया था। पर पद, आत्मप्रचार और प्रतिष्ठा की भूख से वे असम्पृक्त रहे और हर प्रकार के दबावों के बाद भी उनका ओजस्वी व्यक्तित्व किसी प्रकार विचलित नहीं कर पाता था। उनकी अध्यक्षता में सम्पन्न कोझीकोड अधिवेशन राजनीतिक जीवन का एक दृष्टान्त बन गया था जहां उन्होंने एक स्वस्थ विकल्प की घोषणा की थी।

दीनदयाल जी ने एकात्म मानववाद का विश्लेषण करते हुए कहा था कि इसका दार्शनिक आधार अद्वैत का नववेदान्त ही है जैसे मार्क्सवाद का द्वंद्वात्मक भौतिकवाद है। आधुनिक हिंदी साहित्य में विवेकानंद के नववेदान्त यानी अद्वैत समता चिंतन का प्रभाव पड़ा है जैसे बांग्ला साहित्य पर, परन्तु राजनीति में नववेदान्त की चर्चा नहीं होती, द्वंद्वात्मक भौतिकवाद का ढोल बजता रहता है।

वह 10 फरवरी 1968 की कालीरात थी जब लखनऊ से पटना जानेवाली रेलगाड़ी में उनके जीवन का सहसा अंत हो गया। देश इस देहावसान के समाचार के लिए तैयार न था। इसमें एक षडयंत्र की रहस्यमय दुर्गन्ध थी। भारतीय दर्शन, इतिहास और अर्थशास्त्र में उनके चिंतन से जो मार्ग स्पष्ट दीख रहा था वह अनेक वामपंथी व कांग्रेसी बुद्धिजीवियों के गले नहीं उतर रहा था।

राष्ट्रभक्त इतिहासकार
पुरूषोत्तम नागेश ओक

जिन्होंने साक्ष्यों के साथ दुनिया का ध्यान आकर्षित किया कि ताजमहल प्राचीन विशाल शिव मंदिर का परिसर था

देश की शिक्षा पद्धति ने पिछली कई पीढ़ियों से हमारी मानसिकता में इतना बड़ा बदलाव आ चुका है जो मुझे अपने स्वयं के अनुभवों ने एक नए मूल्यांकन की दृष्टि द्वारा मिल चुका है। लगभग 5 दशक पूर्व जब मैं स्वयं एक विद्यार्थी था तब पहली बार समाचार पत्रों में पढ़ा कि किसी राष्ट्रवादी विक्षिप्त पत्रकार व इतिहासकार पुरुषोत्तम नागेश ओक के अनुसार ताजमहल वस्तुतः एक विशाल प्राचीन देवालय– तेजो

महालय– की नींव व उसके परिसर में आगरा में मुगल सम्राट शाहजहां ने रूपाचरित किया था, तब मुझे भी यह एक विक्षिप्त का क्रूर मखौल लगा था। इसका कारण यह था कि उस समय के देश के सभी अंग्रेजी पत्रकार व इतिहास की पाठ्यपुस्तकें ऐसा ही घोषित कर रही थीं।

यह तो बहुत बाद में लेखक को ज्ञात हुआ कि श्री पी0एन0ओक कोई सामान्य, अधकचरे, सनसनीखेज स्तम्भ लिखने वाले पत्रकार नहीं; बल्कि अपने समय के सर्वाधिक महत्व के अंग्रेजी दैनिकों से जुड़े थे और उनकी तथ्यपूर्ण, साक्ष्यों से समर्थित, पुरातत्वसंबंधी रचनाएं विश्वभर में जहां भी अंग्रेजी के पाठक हैं, ध्यान से पढ़ी जाती थी। यह सिर्फ हमारा अपना ही देश था जहां स्वतंत्रता के लिए एकजुट हुए तथा कथित कांग्रेसी व प्रबुद्ध होने का दावा करने वाले वामचर्य उनके प्रत्येक रहस्योद्घाटन के विरुद्ध मखौल उड़ाने के साथ– साथ त्याज्य दक्षिणपंथी ही कहते थे।

यह विश्वास नहीं होता है कि स्वतंत्रता के बाद श्री पी0एन0ओक ने आजीविका के लिए पत्रकारिता क्षेत्र को स्वेच्छया चुना था। 1947 से 1953 तक वे 'हिन्दुस्तान टाइम्स' व 'स्टेटसमेन' के दिल्ली में संवाददाता रहे थे। 1954 से 1957 तक उन्होंने सूचना एवं प्रसार मंत्रालय में एक वरिष्ठ अधिकारी के रूप में कार्य किया। फिर 1959 से 1974 तक दिल्ली स्थित अमरीकी दूतावास की सूचना सेवा में उपसंपादक का काम संभाला। अपनी रुचि के अनुसार वे पुरातत्व व इतिहास लेखन साथ– साथ करते रहे थे।

श्री पी0एन0ओक का मत था कि भारत में जिन भवनों को मुगलकालीन निर्माण बताया जाता है वे सब भारतीय हिंदू शासकों द्वारा निर्मित हैं और मूलतः हिंदू वैदिक वास्तुशास्त्र को ध्यान में रखकर बनाए गए हैं। मुस्लिम शासकों ने उन पर कब्जा किया और कुछ फेरबदल कर उसे अपने नाम से प्रचारित कर दिया। स्वतंत्रता के बाद भारत सरकार ने भी सच को सदा दबाकर रखा।

जवाहर लाल नेहरू का मौलाना अबुल कलाम आजाद को देश का पहले केन्द्रीय शिक्षा मंत्री बनाना हमारी अदम्य सांस्कृतिक व आत्मघाती भूल थी। श्री ओक ने ऐसे तथ्यों को उजागर किया जिन्हें आज तक कोई काट नहीं सका है। ताजमहल तो मात्र एक उदाहरण है, देश में ऐसे दर्जनों स्मारक, मस्जिदें, दरगाह व प्रसिद्ध तीर्थ हैं जिन्हें इस्लामी

राष्ट्रीयता तथा देश के पारम्परिक मूल्यों की रक्षा के लिए कृतसंकल्प पं. दीनदयाल जी उपाध्याय का सामाजिक चिंतन एक पूर्णरूपेण नई दिशा प्रदान करता है। वे ऐसे कर्मयोगी थे जिन्होंने सामाजिक व्यवस्थाओं के आधार की व्यावहारिक व्याख्याएं की थी जो आज भी प्रासंगिक हैं।

पत्रकारिता को नई दृष्टि

पं. दीनदयाल जी ने 'राष्ट्र धर्म (मासिक) और 'पांचजन्य' (साप्ताहिक) की स्थापना द्वारा देश में पत्रकारिता को नई दृष्टि दी थी। वे अजातशत्रु कहलाते थे और भारतीय मनीषा के सार– एकात्म मानववाद के माध्यम से वैश्विक चिंतन में एक सर्वथा मौलिक अवधारणा के जनक थे। विश्व में प्रचलित अनेक वादों से ऊपर उठकर उन्होंने जिस दार्शनिक, आध्यात्मिक एवं आर्थिक विकास की व्यावहारिक परिकल्पना की थी वह उनके अद्भुत एवं मौलिक चिंतन का परिणाम थी। इसीलिए उन्हें सामाजिक समता और समरसता का पुरोधा भी कहा गया था तथा एक वीतराग कर्मयोगी मर्यादा पुरुष भी।

दिसम्बर 1952 की 26, 30 और 31 तारीख के दिन भारतीय जनसंघ का प्रथम अखिल भारतीय अधिवेशन कानपुर के फूलबाग (गणेश उद्यान) में हुआ था। उस अधिवेशन की व्यवस्था श्री बाबूराम शुक्ल, रेवतीरमण रस्तोगी तथा राजा इन्दूरकर देख रहे थे जो उस समय डीएवी कालेज के विद्यार्थी थे। चाहे पहले दिन की निकाली गई शोभायात्रा हो या बाद में भाषणों का उत्साह डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी की उपस्थिति ने सारे महोत्सव में प्राण फूंक दिए थे। दीनदयाल जी की सामान्य दुबली पतली काया, सादी वेशभूषा व चप्पलें आज भी लोग याद करते हैं।

लेखकीय मेधा

पं. दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रवादी विचारधारा के संवादी थे। चाहे व्यक्ति से व्यक्ति के मध्य हो या भावों के प्रवाह का कोई स्तर हो, वे हर प्रकार के व्यक्ति से तादात्म्य स्थापित कर लेते थे। भारतीय परंपरा के आधुनिक दृष्टा के रूप में उन्होंने ''जगद्गुरु शंकाराचार्य'' पर एक ग्रंथ लिखा था जो अत्यन्त लोकप्रिय हुआ था।

क्रमशः

पहचान देने की महीय अपमानजनक राजनीतिक कोशिशें भी की गई हैं।

श्री पी0एन0ओक की दो पुस्तकें मराठी में भी उपलब्ध हैं जिनके कई भाषओं में अनुवाद हो चुके हैं। 'हिन्दुस्थान के दुसरे स्वातन्त्र्य युद्ध' तथा 'नेताजीच्या सहवासांला' हिंदी में उनकी पुस्तकें भारतीय इतिहास की भयंकर भूले, ''विश्व इतिहास के विलुप्त अध्याय'', ''कौन कहता है अकबर महान था?'', ''दिल्ली का लाल किला हिन्दू कोट है।'', ''लखनऊ के इमामबाड़े'', ''हिंदू राजमहल है'', ''फतेहपुर सीकरी एक हिंदू नगर'', ''आगरा का लाल किला हिंदू भवन है'', ''भारत में मुस्लिम सुल्तान'' (दो भाग) आदि– आदि। उनके जिस लेखन ने वस्तुतः विश्वभर को पुरातत्वविदों, इतिहासकारों में हलचल मचा दी थी वह उनके द्वारा प्रतिपादित मत था कि ताजमहल तेजोमहालय नामक शिव मंदिर था और इस संबंध में उनका रचा साहित्य सर्वाधिक लोकप्रिय हुआ है।

इतिहास श्री ओक का सबसे प्रिय विषय था। उन्होंने इंस्टीट्यूट फॉर रिराईटिवार्ल्ड हिस्ट्री नामक संस्थान की स्थापना की थी और उनके द्वारा नए शोध भी सामने लाए जाते रहे थे। वे नए सत्यान्वेशी इतिहासकारों को पूरी तरह सहायता देकर अपने कार्य को आगे बढाते रहे। वे इस बात के लिए प्रतिबद्ध थे कि ईसा के पहले सारे विश्व में वैदिक संस्कृति व संस्कृत भाषा के पहले का चलन था। 4 दिसम्बर 2007 को पुणे में उनका निधन हो गया था।

श्री ओक का जन्म 2 मार्च 1917 को इंदौर में हुआ था। उनके पिता का नाम नागेश एवं माता का जानकी बाई था। बचपन से ही वे मेधावी छात्र थे और उन्होंने 1933 में मैट्रिक, 1937 में बी0ए0, 1939 में एम0ए0 तथा 1940 में कानून की परीक्षा मुंबई विश्वविद्यालय से उत्तीर्ण की। जब 1939 में द्वितीय विश्वयुद्ध शुरु हो गया था। श्री ओक खडकी (पुणे) स्थित सैन्य प्रतिष्ठान में भर्ती हो गए। वहां 8 मास के प्रशिक्षण के बाद उन्हें सिंगापुर भेज दिया गया। वहां जापानियों ने उन्हें बंदी बना लिया पर कुछ समय बाद जब भारतीय सैनिकों ने जापान का सहयोग करने का निश्चय किया तो सभी 60,000 बंदियों को छोड़ दिया गया। तब श्री ओक सैगान वियतनाम रेडियो से भारत की स्वतंत्रता के लिए प्रचार करते रहे। आगे चलकर वे नेताजी सुभाषचन्द्र बोस के निकट सहयोगी बन गए।

चाहे अयोध्या में नब्बे के दशक में कथित बाबरी मस्जिद का ध्वंस हो या तुगलकाबाद का पुराना किला हो जो वस्तुतः पृथ्वीराज चौहान का पुराना लालकोट था जिसे भारत में पहली बडी मस्जिद या ''कुब्बते– इस्लाम'' (माइट और इस्लाम) कहा जाता है अथवा जौनपुर की अटाला मस्जिद– ये सब श्री ओक द्वारा हिंदू पुरातात्विक महत्व के सशक्त ढांचे माने गए थे जिनकी प्राचीनता व कालक्रम को व्यवस्थित कर चुके थे।

बाद में प्रसिद्ध लेखक व पत्रकार बी0एस0नायपाल, नीरद चौधरी, फारूख ढोंढी, गिरिलाल जैन ने उनके ध्वंस या उन पर हिंदू दावों का जो समर्थन किया था वह श्री पी0एन0ओक के द्वारा व्याख्यायित श्रोतों व तथ्यों के कारण था। आज नोबेल पुरस्कार विजेता बी0 एस0 नायपाल की 500 से अधिक पृष्ठों का ''इण्डियाः ए मिलियन क्यूटिनीज'' नामक ग्रंथ व कुछ अन्य पुस्तकें विश्वभर में चर्चित है पर उन्हीं सत्यापित तथ्यों को राष्ट्रवादी इतिहासकार पुरुषोत्तम नागेश ओक दशकों पहले ही संकलित कर चुके थे।

– हरिकृष्ण निगम

ताजमहल मकबरा या मंदिर, स्पष्ट करे मंत्रालय : केंद्रीय सूचना आयोग

नई दिल्ली। केंद्रीय सूचना आयोग (सीआईसी) ने केंद्रीय संस्कृति मंत्रालय को इस विषय पर अपना रुख स्पष्ट करने को कहा है कि ताजमहल शाहजहां द्वारा बनवाया गया एक मकबरा है या शिव मंदिर है, जिसे एक राजपूत राजा ने मुगल बादशाह को तोहफे में दिया था। यह सवाल एक आरटीआई अर्जी के जरिए सीआईसी पहुंचा और अब यह संस्कृति मंत्रालय के पास है।

सूचना आयुक्त श्रीधर आचार्यलु ने एक हालिया आदेश में कहा कि मंत्रालय को इस मुद्दे पर विवाद खत्म करना चाहिए और सफेद संगमरमर से बने इस ऐतिहासिक मकबरे के बारे में संदेह दूर करना चाहिए। गौरतलब है कि ताजमहल को दुनिया के सात अजूबों में एक माना जाता है। मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी बेगम अर्जुमंद बानो बेगम मुमताज महल की याद में इसे बनवाया था।

आचार्यलु ने सिफारिश की है कि मंत्रालय ताजमहल की उत्पत्ति से जुड़े मामलों पर अपने रुख के बारे में और इतिहासकार पी.एन. ओक और अधिवक्ता योगेश सक्सेना के लेखन के आधार पर अक्सर किए जाने वाले दावों पर जानकारी दें। दरअसल, बी.के.एस.आर. अयंगर नाम के एक व्यक्ति ने आरटीआई डालकर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) से यह पूछा था कि आगरा में स्थित यह स्मारक ताजमहल है या तेजो महालय?

सूचना आयुक्त ने कहा कि एएसआई को आवेदक को बताना होगा कि संरक्षित स्थल ताजमहल में क्या कोई खुदाई की गई है, यदि ऐसा है तो उसमें क्या मिला। उन्होंने कहा, 'खुदाई के बारे में फैसला संबद्ध सक्षम अथॉरिटी को लेना होगा। आयोग खुदाई या गुप्त कमरों को खोलने का निर्देश नहीं दे सकता।' आपको बता दें कि ओक ने अपनी पुस्तक 'ताज महल : द ट्रू स्टोरी' में दलील दी है कि ताजमहल मूल रूप से एक शिव मंदिर है जिसे एक राजपूत शासक ने बनवाया था जिसे शाहजहां ने स्वीकार किया था। (नवभारत टाईम्स, 10 अगस्त)

लिव-इन रिलेशनशिप सामाजिक आतंकवाद

जयपुर। राजस्थान मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष प्रकाश टाटिया ने लिव–इन रिलेशनशिप को "सामाजिक आतंकवाद" करार दिया है। झारखंड हाई कोर्ट के रिटायर्ड चीफ जस्टिस और राजस्थान हाई कोर्ट के पूर्व जज ने कहा, 'यह कैसी आजादी है जिसमें समाज को बिना बताए किसी के साथ रहा जाता है। इससे समाज कलंकित होता है।'

उन्होंने कहा कि 'लिव–इन रिलेशन' पर पाबंदी लगनी चाहिए। इसके लिए कानून की जरूरत है जैसे शादी के लिए रजिस्ट्रेशन को जरूरी किया गया है। दो लोग साथ रहकर समाज की प्रतिष्ठा को दांव पर नहीं लगा सकते, शादी की तरह ही लिव–इन के लिए रजिस्ट्रेशन जरूरी होना चाहिए।' उन्होंने बताया कि 50 साल की महिला को कैंसर होने के बाद उसका पार्टनर छोड़कर चला गया। फिर महिला ने एचआरसी से मदद मांगी।

इससे पहले राजस्थान की राज्य महिला आयोग की अध्यक्ष सुमन शर्मा भी कुछ इसी तरह का बयान दे चुकी हैं। उन्होंने कहा था कि वह लिव–इन रिलेशनशिप के खिलाफ कैंपेन चलाएंगी क्योंकि यह हमारी संस्कृति के खिलाफ है। सुमन शर्मा ने कहा था, 'ऐसे रिश्ते खत्म होने पर सबसे ज्यादा महिलाओं को सहना पड़ता है। ऐसी महिलाओं की मदद करने का भी कोई प्रावधान नहीं है क्योंकि यह हमारी संस्कृति के खिलाफ है।'

(नवभारत टाईम्स, 20 अगस्त)

अमेरिकी वैज्ञानिकों का दावा

'फूंक मारकर मोमबत्तियाँ बुझाने से कीटाणुओं से भर जाता है केक'

वॉशिंगटन : अमेरिका की क्लेमसन यूनिवर्सिटी के शोधकर्ताओं ने कहा की जन्मदिन केक पर लगी मोमबत्तियाँ बुझाते समय केक पर थूक फैल जाता है जिसके कारण केक पर १४०० प्रतिशत बैक्टीरिया बढ़ जाता है।

'जर्नल ऑफ फूड रिसर्च' में प्रकाशित इस स्टडी के शोधकर्ताओं के अनुसार, 'जन्मदिन मोमबत्तियाँ को फूंक मारकर बुझाने की परंपरा की शुरुआत के पीछे अलग–अलग मान्यताएं हैं। कुछ मान्यताएं कहती हैं कि यह परंपरा प्राचीन ग्रीस में शुरू हुई जिसके तहत केक पर जली हुई मोमबत्ती लगाकर हंट की देवी आर्टिमिस के मंदिर ले जाया जाता था।' तो वहीं कुछ दूसरी प्राचीन सभ्यताएं मानती हैं कि कैंडल बुझाने के बाद उससे निकलने वाला धुंआ आपकी मन्नत और प्रार्थनाओं को भगवान तक लेकर जाता है।

शोधकर्ताओं के अनुसार, इंसान के सांस में मौजूद बायोएरोसोल बैक्टीरिया का स्त्रोत है जो फूंक मारने पर केक की सतह पर फैल जाता है। इंसानों का मुँह बैक्टीरिया से भरा होता है। हालाकिं इनमें से ज्यादातर बैक्टीरिया हानिकारक नहीं होते हैं। परंतु अगर कोई बीमार व्यक्ति मोमबत्तियाँ को बुझा रहा है तो उस केक को खाने से से बचे।

संदर्भ : नवभारत टाइम्स

पृष्ठ 09 का शेषांश...

पाठ्यक्रम में शामिल किया गया है। दूसरा सवाल है कि संस्कृत पढ़ाई कैसे जाती है ? आपने ध्यान दिया होगा कि आपका बच्चा विद्यालय से घर लौटते समय कार में बैठे हुए मस्ती में संस्कृत व्याकरण पर आधारित गाने गाता होगा ! मैं आपको बताना चाहूंगा कि भारत में अध्ययन करने के समय से लेकर आज तक संस्कृत पढ़ाने को लेकर हमारा क्या दृष्टिकोण रहा है। परंतु पहला सवाल है संस्कृत क्यों ?

इसका उत्तर देने से पहले हमें संस्कृत के गुणों पर ध्यान देना होगा। अपनी आवाज की सुमधुरता, उच्चारण की शुद्धता और रचना के सभी आयामों में संपूर्णता के कारण यह सभी भाषाओं से श्रेष्ठ है! यही कारण है कि अन्य भाषाओं की भांति मौलिक रूप से कभी भी इसमें पूरा परिवर्तन नहीं हुआ। मनुष्य के इतिहास की सबसे पूर्ण भाषा होने के कारण इसमें परिवर्तन की कभी कोई आवश्यकता ही नहीं पड़ी !" (25 जुलाई)

www.hindujagruti.org

स्वास्थ्य

ट्रिपल तलाक अर्थात् तलाक-ए-बिद्दत पर सुप्रीम रोक

मुस्लिम समुदाय में 1400 वर्षों से चल रहे ट्रिपल तलाक (तलाक–ए–बिद्दत) के प्रचलन को सुप्रीम कोर्ट ने दरकिनार करते हुए इसे असंवैधानिक करार दिया है। शीर्ष अदालत ने कहा है कि ट्रिपल तलाक मौलिक अधिकार का उल्लंघन है। पांच सदस्यीय संविधान पीठ द्वारा बहुमत (3/2) के आधार पर दिए गए इस फैसले में कहा गया कि 'ट्रिपल तलाक' साफ तौर पर मनमाना है। क्योंकि इसके तहत संबंध को बचाने का प्रयास करने के बगैर मुस्लिम पुरुषों को वैवाहिक संबंधों को खत्म करने की इजाजत है।

लिहाजा संविधान के अनुच्छेद–25 (धार्मिक स्वतंत्रता) के तहत इस प्रचलन को संरक्षण नहीं दी जा सकती। सनद रहे कि पांच सदस्यीय संविधान पीठ के सदस्य पांच अलग–अलग धर्म के थे।

न्यायमूर्ति कूरियन जोसफ, न्यायमूर्ति रोहिंग्टन एफ नरीमन और न्यायमूर्ति यूयू ललित ने जहां 'ट्रिपल तलाक' को असंवैधानिक करार दिया है। वहीं चीफ जस्टिस जेएस खेहर और न्यायमूर्ति एस अब्दुल नजीर ट्रिपल तलाक को अनुच्छेद–25 का अहम हिस्सा बताया है। इनका कहना है कि 1400 वर्षों से चली आ रही प्रथा धर्म का हिस्सा बन गई है। क्या है इंस्टेंट ट्रिपल तीन तलाक और 'तलाक–ए–सुन्नत'

मुस्लिम समुदाय में 1400 वर्षों से चल रहे ट्रिपल तलाक को कोर्ट में चुनौती दी गई थी जिसे सुप्रीम कोर्ट ने खत्म कर दिया है। ट्रिपल तलाक को तलाक–ए–बिद्दत भी कहते हैं।

क्या है 'तलाक–ए–सुन्नत'

'तलाक–ए–सुन्नत' वैवाहिक रिश्ते को खत्म करने का आसान जरिया माना जाता है। 'तलाक–ए–सुन्नत' के तहत जब पति अपनी पत्नी से एक बार में तीन तलाक बोलता है तो उसके बाद भी पत्नी को तीन माह तक पति के घर में रहना होता है। यह पत्नी के तीन माहवारी तक का चक्र होता है। इसको इद्दत काल भी कहा जाता है।

इस दौरान पति–पत्नी के बीच संबध स्थापित नहीं किए जा सकते हैं। इस दौरान पति–पत्नी अपने बीच के आपसी मतभेद को भुला कर तलाक का फैसला बदल सकते हैं।

अगर इस तीन माह के दौरान पति–पत्नी साथ में आते हैं तो तलाक निरस्त हो जाता है। मगर इस इद्दत काल के गुजरने के बाद भी पति अपनी पत्नी से संबध नहीं रखना चाहता है या पति तलाक को निरस्त नहीं करता है तो फिर आखिरी फैसला तलाक की माना जाता है।

तलाक ए बिद्दत के बाद का रास्ता है निकाह हलाला

तलाक–ए–बिद्दत के तहत जब पति अपनी पत्नी को एक बार में पत्र, फोन, मैसेज या ई–मेल के जरिए तीन तलाक कहता है तो तुंरत तलाक हो जाता है, जिसे कि फिर निरस्त नहीं किया जाता है।

इसके बाद अगर पति–पत्नी के बीच आपसी मतभेद खत्म हो जाते हैं और वह फिर से साथ आना चाहते हैं तो उसके लिए फिर एक विकल्प होता है जिसे निकाह हलाला कहते हैं।

मालूम हो कि निकाह हलाला में पत्नी को किसी दूसरे व्यक्ति से निकाह करना होता है और उससे शारीरिक संबंध बनाने होंगे। इसके बाद पत्नी को उस शख्स से भी तलाक लेना होता है और इद्दत काल की अवधि को गुजारना पड़ता है जिसके बाद पत्नी अपने पहले पति के साथ वापस आ सकती है।

तलाक–ए–बिद्दत में यही सबसे बड़ी खामी मानी जाती है। यही इंस्टेंट ट्रिपल तलाक होता है, जिसे सुप्रीम कोर्ट ने खत्म कर दिया है।

(अमर उजाला, 22 अगस्त)

बीजेपी एमएलए की मांग

हिंदू इलाकों में मुस्लिमों को ना दिया जाए घर क्योंकि ....

सुरत : गुजरात बीजेपी विधायक संगीता पाटिल ने अपने लिम्बयात क्षेत्र में डिस्टर्बड एरिया एक्ट को लागू करने की मांग की है ताकि कोई भी मुस्लिम व्यक्ति हिंदुओं के पड़ोस में घर न खरीद सके। पाटिल द्वारा लिखित में जिला अधिकारी को इस एक्ट को लागू करने की मांग की है। सूत्रों के अनुसार इसके पीछे इलाके में घाटी कुछ घटनाओं को बताया जा रहा है।

पाटिल ने आरोप लगाया कि मुसलमान हिंदू सोसायटी में घर खरीदने के लिए हर प्रकार की चालाकी का उपयोग करते हैं। इतना ही नहीं घर बुक करने के लिए वे लोगों को धमकी भी देते हैं।

सूरत का लिम्बयात इलाका पहले केवल एक हिंदू इलाका हुआ करता था लेकिन अब वहां पर मुसलमानों का प्रभुत्व है। लिम्बयात के अलावा ऐसी कई सोसायटी है जो कि हिंदू नाम पर हैं जिनमें गोविंद नगर, भारती नगर, मदनपुरा और भावना पार्क शामिल हैं। अब इन सभी सोसायटियों में मुसलमानों

शेष पृष्ठ 21 पर.....

ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय ने मनाया रक्षबंधन

लंदन : ब्रिटेन के रक्षा मंत्रालय में सशस्त्र बलों के सिपाहियों ने देश के हिन्दुओं के साथ रक्षा बंधन का त्यौहार मनाया। इसके अलावा लंदन में रक्षा मंत्रालय, न्यूकैसल, स्विनडन, लिवरपूल में भी रक्षा बंधन की धूम रही!

ब्रिटेन के रक्षा मंत्री अर्ल होवे ने बताया, ''हमने एक–दूसरे को रंग बिरंगी राखियां बांधी !'' यह एक अनोखा मौका है जो हमें अपने महान हिन्दू समुदाय और सशस्त्र बलों को एक साथ जोडने के बहुआयामी संबंधों की याद दिलाता है। खुद की सुरक्षा के लिए हमें अवश्य एकजुट रहना चाहिए और उन लोगों के बारे में बात करनी चाहिए जो सहिष्णुता, निष्पक्षता और गरिमा में विश्वास रखते हैं !"

लंदन स्थित रक्षा मंत्रालय मुख्यालय में सशस्त्र बलों, रक्षा मंत्रालय के कर्मचारियों और सिविल सेवकों की कलाई पर राखी बंधी थी। हिन्दू काउंसिल यूके और हिन्दू फोरम ऑफ ब्रिटेन समेत अलग–अलग सामुदायिक संगठनों के सदस्यों ने एकजुट होकर यह त्यौहार मनाया। साथ में, चीफ ऑफ डिफेंस पीपुल–लेफ्टिनेंट जनरल रिचर्ड नुगी भी थे।

रक्षा मंत्रालय ने एक बयान में कहा है कि हिंदुओं ने समय–समय पर ब्रिटेन की रक्षा में योगदान दिया है। पहले विश्व युद्ध के दौरान पौने दो लाख हिंदुओं को विदेशों में तैनात किया गया था। दूसरे विश्व युद्ध में १२.५ लाख हिंदुओं ने जीत दिलाने में अहम भूमिका निभाई !

(पंजाब केसरी, अगस्त 9, 2017)

अण्डमान एवं निकोबार द्वीप समूह के उपराज्यपाल को रक्षासूत्र बांधते विहिप कार्यकर्ता/कार्यकर्त्रियाँ।

email:hinduvishwa@gmail.com
website: www.vhp.org

Postal Regd. No. DL-SW-1/4031/2015-17
समाचार पत्र पंजी. सं. 68516/98
मुद्रण- तिथि : 28.08.17
प्रेषण तिथि : 29-30 (अग्रिम-पाक्षिक)

LPS BOSSARD

MORE THAN NUTS AND BOLTS

LPS Bossard is a leading supplier of intelligent solutions for industrial fastening technology. The company's complete protfolio for fasteners includes sales, technical consulting (engineering) and inventory management (logistics).Its customers include local and multi-national industrial companies who use LPS Bossard's solutions to improve their productivity.

MR. RAJESH JAIN
MD,LPS BOSSARD

LPS Bossard Pvt. Ltd.
NH-10,Delhi Road,Kharawar Bye Pass
Rohtak-124001 (INDIA)
Phone: +91-1262 305164-200 Fax : +91-1262 305111,112
Email: india@lpsboi.com website : www.bossard.com

प्रकाशक व मुद्रक परमानन्द मनोहर द्वारा सचिव, साहित्य एवं दृक्श्राव्य सेवा न्यास की ओर से 'साइबर क्रिएशन्स' जे.ई.–9, खिड़की एक्सटेंशन, मालवीय नगर, नई दिल्ली–17 से छपवाकर संकटमोचन आश्रम, सेक्टर–6, रामकृष्णपुरम्, नई दिल्ली–22 से प्रकाशित। सम्पादक : मानवेन्द्र नाथ पंकज